राजभाषा गृह पत्रिका
वर्ष 2023-24

नराकास उपक्रम चेन्नई द्वारा वर्ष 2022-23 के लिए राजभाषा शील्ड द्वितीय पुरस्कार प्राप्त करते हुए महाप्रबंधक(क्षेत्र)

अन्नायलम
चतुर्थ अंक

वर्ष 2022-23 के लिए दक्षिणांचल राजभाषा शील्ड तृतीय पुरस्कार मंडल कार्यालय, वेल्लूर को प्रदान करते हुए

भारतीय खाद्य निगम
तमिलनाडु क्षेत्र

दिनांक 10 एवं 11, अप्रैल, 2023 को ऊठी में आयोजित संसदीय स्थायी समिति का अध्ययन दौरे की झलकियां

अन्नालयम चतुर्थ अंक

प मुत्तुमारन
महाप्रबंधक(क्षेत्र)
प्रधान संरक्षक

अरूण कुमार
उप महाप्रबंधक(विधि/राजभाषा)
संरक्षक

धीरेंद्र सिंह बोनाल
सहायक महाप्रबंधक(राजभाषा)
मुख्य संपादक

साक्षी शरद वेखंडे
प्रबंधक(लेखा/राजभाषा)
संपादक

लोकेश कुमार शाह के आर
प्रबंधक(राजभाषा)
संपादक

पंकज सिंह
सहायक श्रेणी.III(राजभाषा)
सह संपादक

सुमन सिंह
सहायक श्रेणी.II(राजभाषा)
सह संपादक

पत्रिका में प्रकाशित समस्त रचनाएं लेखकों के अपने विचार हैं। पत्रिका अथव संपादक मंडल का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। रचनाओं की मौलिकता के लिए संबंधित रचनाकार स्वयं उत्तरदायी हैं। केवल अंतरिक वितरण हेतु।

कार्यालय पता : महाप्रबंधक(क्षेत्र) का कार्यालय, भारतीय खाद्य निगम, क्षेत्रीय कार्यालय,
सं.8, मेयर सत्यमूर्ति रोड, चेटपेट , चेन्नई - 600 031 ई.मेल पता : srmtn.fci@gov.in

पत्रिका डिज़ाइनिंग : श्री लोकेश कुमार शाह के आर, प्रबंधक(राजभाषा)

अशोक के के मीना, भा.प्र.से.
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नई द्वारा राजभाषा हिंदी गृह–पत्रिका 'अन्नालयम' के चौथे अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। तमिलनाडु क्षेत्र में राजभाषा गतिविधियों में उल्लेखनीय कार्य किया जा रहा है। राजभाषा हिंदी की गतिविधियों को जनमानस तक पहुंचाने की दिशा में त्रिभाषी सूत्र को लागू किया है जिसके फलस्वरूप जनमानस में न केवल राजभाषा हिंदी को समझने की भावना उत्पन्न हुई बल्कि भाषा सीखने में भी जागरूकता पैदा हुई है।

मैं गर्व के साथ यह कह सकता हूं कि राजभाषा हिंदी के प्रति तमिलनाडु क्षेत्र में माहौल बदल रहा है। सभी कार्मिक हिंदी शिक्षण योजना द्वारा राजभाषा हिंदी सीखने के प्रति जागरूक हुए हैं। राजभाषा हिंदी को अपने कार्यालय में लगातार लागू करने और विभिन्न राजभाषा गतिविधियों में अपना हिस्सा सुनिश्चित करने में तमिलनाडु क्षेत्र की इस पत्रिका 'अन्नालयम' का चौथा अंक निश्चय ही अपना लक्ष्य हासिल करने में सफल होगा।

मैं 'अन्नालयम' के चौथे अंक के सफल प्रकाशन के लिए तमिलनाडु क्षेत्र के रचनाकारों तथा संपादक मंडल को तहेदिल से शुभकामनाएं देता हूं और भविष्य में भी इसकी प्रोन्नति की कामना करता हूं।

अशोक

(अशोक के के मीना)

अजय कुमार
कार्यकारी निदेशक(अंकेक्षण/राजभाषा)

संदेश

मुझे यह जानकर खुशी हो रही है कि क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नई अपनी वार्षिक राजभाषा गृह पत्रिका 'अन्नालयम' के चौथे अंक का प्रकाशन कर रहा है।

कार्यालयों में राजभाषा हिंदी का कार्यान्वयन एक संवैधानिक दायित्व है। इसके लिए हिंदी को हृदय से अपनाना होगा तभी कार्यालयीन कार्यों में राजभाषा हिंदी का प्रचार–प्रचार हो सकेगा। राजभाषा गृह पत्रिका अपनी रचनात्मक प्रतिभाओं को लेखनी के माध्यम से व्यक्त करने हेतु उपयुक्त मंच प्रदान करती है। संपूर्ण भारतवर्ष में हिंदी बोली, समझी और पढ़ी जाती है। हिंदी विभिन्न भाषा–भाषियों एवं विभिन्न बोली बोलने वाले लोगों के बीच एक सेतु के रूप में कार्य करती है।

मुझे विश्वास है कि यह गृह पत्रिका निगम के दक्षिण क्षेत्र में राजभाषा प्रगति के संवर्धन एवं प्रगति में सहायक सिद्ध होगी एवं दक्षिण क्षेत्र में निगम के कार्य–कलापों को प्रतिबिंबित करने का उचित माध्यम बनने में सफल होगी।

पत्रिका के संपादन एवं प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

अजय कुमार

(अजय कुमार)

जेसिंता लासरस
कार्यकारी निदेशक(दक्षिण)

संदेश

मुझे यह जानकर बहुत खुशी हुई है कि भारतीय खाद्य निगम, क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नई ने हिंदी गृह पत्रिका का चतुर्थ अंक 'अन्नालयम' प्रकाशित करने जा रहा है। ऐसे कार्यकलापों से अधिकारियों/कर्मचारियों में राजभाषा हिंदी के प्रति रूचि बढ़ती है और जिसका असर उनके राजभाषा कामकाज में भी होता है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि 'अन्नालयम' पत्रिका निश्चय ही अपने लय में खरा उतरेगा और राजभाषा कार्यान्वय के क्षेत्र में एक मिसाल बनकर सामने आएगा। इसके साथ ही इस पत्रिका में अपने रचना देने वाले सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को शुभकामनाएं देती हूं और सराहना करती हूं। संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

(जेसिंता लासरस)

?

राजेश कुमार
महाप्रबंधक(राजभाषा)

संदेश

मैं बहुत उत्साहित हूं कि भारतीय खाद्य निगम, क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नई की राजभाषा गृह पत्रिका 'अन्नालयम– का चतुर्थ अंक प्रकाशित होने जा रहा है। यह राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने की दिशा में एक सराहनीय प्रयास है।

हिंदी गृह पत्रिकाओं का प्रकाशन राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन एवं उसके सर्वांगीण विकास में जहां अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, वहीं दूसरी ओर रचनात्मक प्रतिभाओं को प्रोत्साहित करने का उपयुक्त माध्यम भी बनती है। इन्हीं उद्देश्यों के साथ–साथ 'अन्नालयम–पत्रिका का चतुर्थ अंक प्रस्तुत करते हुए मुझ अत्यंत खुशी महसूस हो रही है।

सभी रचनाकारों सहित संपादक मंडल को इस पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु शुभकामनाएं एवं बधाईयां।

(राजेश कुमार)

प मुत्तुमारन
महाप्रबंधक(क्षेत्र)

प्रधान संरक्षक

यह हर्ष का विषय है कि भारतीय खाद्य निगम, क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नई द्वारा चतुर्थ अंक ''अन्नालयम'' राजभाषा हिंदी गृह पत्रिका प्रकाशन करने जा रहा है। हिंदी का महत्व केवल राजभाषा में ही नहीं, बल्कि जनभाषा के रूप में सर्वोपरि है क्योंकि वह साक्षरों की ही नहीं, निरक्षरों की भी भाषा है। इसी मुद्दे को ध्यान में रखते हुए इसे बोलचाल की भाषा से कामकाज और कारोबार के माध्यम की भाषा का दर्जा दिलाने के लिए हम सबको हर संभव प्रयास करना होगा। इसी दिशा में आगे बढ़ते हुए ''अन्नालयम'' राजभाषा हिंदी गृह पत्रिका अपना मूलभूत सिद्धांतों को कायम रखते हुए निगम के मुख्यक कार्य को भी साथ जोड़ने का अद्भुत कार्य किया है।

राजभाषा कार्यान्वयन में भारतीय खाद्य निगम, तमिलनाडु क्षेत्र एक अग्रगामी कार्यालय के रूप में सामने उभरकर आ रहा है। जिसके तहत क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नएई को नगर राजभाषा कार्यान्वायन समिति(उपक्रम) चेन्नई द्वारा वर्ष 2022-23 के लिए छोटे कार्यालयों की श्रेणी में उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन के लिए द्वितीय पुरस्कार एवं भारतीय खाद्य निगम, दक्षिणांचल के उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन योजना पुरस्कार के तहत वर्ष 2022-23 के लिए मंडल कार्यालय, वेल्लूर को तृतीय पुरस्कार प्रदत्त किया गया है। साथ ही खाद्य मंत्रालय के हिंदी सलाहकार समिति की बैठक मदुरै में सफल आयोजन में भी भूमिका निभाई है। जिसके लिए सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को बधाई देता हूँ।

आप सबसे अपील है कि हिंदी बहुत सरल, सरस, सहज और मधुर भाषा है। इसे आगे बढ़ाने का दायित्व हम सभी का है। हमारा कर्तव्य है कि हम राजभाषा हिंदी के बारे में संविधान में निहित मूल संकल्पना को आत्मसात करें और हिंदी में कार्य करते हुए गर्व का अनुभव करें। हिंदी का प्रयोग, प्रेरणा, प्रोत्साहन व सद्भावना से बढ़ाया जाता है।

मैं ''अन्नालयम'' के चतुर्थ अंक के सफल प्रकाशन के लिए संपादक मंडल एवं लेखकों को बधाई देता हूँ और इसे आगे बढ़ाने का जिम्मा हम सबका है और विशेषकर राजभाषा अनुभाग के इन प्रयासों का बधाई देता हूँ।

प. मु. मारन

(प मुत्तुमारन)

अरूण कुमार
उप महाप्रबंधक(विधि/राजभाषा)

संरक्षक

यह अत्यंत गर्व की बात है कि क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नई द्वारा हिंदी राजभाषा गृह पत्रिका ''अन्नालयम'' का चतुर्थ अंक प्रकाशित किया जा रहा है।

पत्र–पत्रिकाएं किसी भी संस्था या कार्यालय की पहचान होती हैं, जो अधिकारियों एवं कर्मचारियों के अभिव्यक्ति, विचार एवं उनकी प्रतिभा को उजागर कर उन्हें उचित सम्मान दिलाती है। यह पत्रिका तमिलनाडु क्षेत्र में हिंदी के कार्यान्वयन को सफल बनाने में सहायक सिद्ध होगी। भाषा के निर्माण में प्रत्येक व्यक्ति का कुछ न कुछ योगदान अवश्य रहता है।

पत्रिका के रचनाकारों एवं संपादनकर्ताओं का हार्दिक अभिनंदन। ''अन्नालयम'' के चतुर्थ अंक के सफल प्रकाशन की कामना करता हूँ।

(अरूण कुमार)

धीरेंद्र सिंह बोनाल
सहायक महाप्रबंधक(राजभाषा)

मुख्य संपादक

क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नई के वार्षिक पत्रिका "अन्नालयम" के चतुर्थ अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए बेहद खुशी हो रही है। इसका पूरा श्रेय महाप्रबंधक(क्षेत्र) एवं उप महाप्रबंधकों को जाता है, जिनके विशेष मार्गदर्शन एवं सहयोग से यह संभव हो पाया।

निस्संदेह लेखकों एवं पाठकों की एक अद्भुत सामंजस्य से "अन्नालयम" के चतुर्थ अंक प्रकाशित किया जा सका है। प्रत्येक वर्ष नये–नये विषय पर कार्मिकों द्वारा उनके ऊर्जावान शब्दों द्वारा रचित लेखों को प्रस्तुत किया जाना अपने–आप में एक बड़ी उपलब्धि है। हम आशा करते हैं कि यह राजभाषा पत्रिका हिंदीतर भाषी क्षेत्र में कार्यरत कार्मिको के लिए बेहद ही उपयोगी साबित होगी।

अंत में, सभी रचनाकारों को साधुवाद और "अन्नालयम" के चुतर्थ अंक की सफलता हेतु शुभकामनाएं देता हूं।

(धीरेंद्र सिंह बोनाल)

लोकेश कुमार शाह के आर
प्रबंधक(राजभाषा)

संपादक की कलम से .....

भारतीय खाद्य निगम, क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नई की ओर से "अन्नालयम" के चतुर्थ अंक को प्रस्तुत करते हुए बहुत खुशी हो रही है। इस विशेष उपलब्धि के लिए महाप्रबंधक(क्षेत्र) के मार्गदर्शन एवं सभी उप महाप्रबंधकों के सहयोग के लिए धन्यवाद अर्पित करता हूँ।

वर्ष 2022-23 में तमिलनाडु क्षेत्र के लिए राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में पहला कदम है। तमिलनाडु क्षेत्र के समस्त मंडल कार्यालयों द्वारा राजभाषा कार्यान्वयन में उल्लेखनीय बढ़ोत्तरी हासिल किया है। उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन के लिए "मंडल कार्यालय, वेल्लूर" को दक्षिणांचल के "राजभाषा शील्ड पुरस्कार" से नवाजा गया है और चेन्नई नराकास(उपक्रम) द्वारा छोटे कार्यालयों की श्रेणी में "क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नई" को द्वितीय पुरस्कार" से अलंकृत किया गया है और इसके साथ–साथ "मंडल कार्यालय, कडलूर" को भी "राजभाषा कार्यान्वयन में "उत्तम निष्पादन" हेतु पुरस्कृत किया गया।

इस अंक में तमिलनाडु क्षेत्र के कार्मिकों ने लेख, कविता, कलाकृति आदि के रूप में अपना योगदान दिया है और कार्मिकों के बच्चों द्वारा शैक्षणिक उपलब्धियों के बारे में भी जानकारी दी गई है। मुझे विश्वास है कि पत्रिका "अन्नालयम" के माध्यम से कार्मिकों में राजभाषा हिंदी को पढ़ने, लिखने और बोलने में रूचि पैदा होगी और वे इसे निरंतर अभ्यास करके सरल रूप में दैनंदिन कामकाज में उपयोग करेंगे।

आशा है कि भविष्य में इसी तरह आपका सहयोग मिलता रहेगा और भाषा को आगे बढ़ाते रहेंगे।

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा–ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल।।
विविध कला शिक्षा अमित, ज्ञान अनेक प्रकार।
सब देसन से लै कहू, भाषा माहि प्रचार।।

(लोकेश कुमार शाह के आर)

अन्नालयम चतुर्थ अंक – अनुक्रमणिका

क्रम सं.	लेखक का नाम	रचना	पृष्ठ सं.
1	डी मोहन प्रिया	पर्यावरण अखंडता–कल के लिए बेहतर दुनिया	13-14
2	सत्येंद्र प्रताप राव	लाचार	14
3	डी. वेंकटेश्वरलू	राष्टीय एकता	15
4	अरुणिमा	मानसिक स्वास्थ्य पर कार्यभार का प्रभाव : एक व्यापक विश्लेषण	16-17
5	रतन सिंह मीना	राजस्थान के किलों की एक झलक	18-19
6	कृष्ण कुमार पी सी	आत्म अनुशासन	20
7	दिशा शर्मा	वसुधैव कुटुंबकम	21
8	सुब्रमनियन आर	इस आधुनिक युग में सरकारी नौकर	22
9	कुणाल कुमार	मैं और मेरी प्यारी बिटिया	23
10	एम बी के सुमन	हिंदी	23
11	अरूण कुमार आर	भारत का धड़कन है हिंदी	23
12	अमित कुमार	आपदा प्रबंधन	24
13	एस भाग्यलक्ष्मी	सच्ची भक्ति	25
14	रोशन कुमार महतो	जहां चाह वहीं राह	25
15	कन्नन पी	भ्रष्टाचार	25
16	पंकज सिंह	आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस	26-27
17	चिडिया	एस रक्षीत्रा	27
18	मेरी पतंग	एस नक्षत्रा	27
19	आनंद वि	पर्यावरण	28-29
20	पंकज सिंह	अधूरा	29
21	एस मिन्हाज नूरिया	अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस	30
22	अरूण कुमार	सहभागिता	31
23	शाश्वत राय	कृषि पर्यटनः पर्यटन का नया ठिकाना, भारत का अनोखा खजाना	32-33
24	सी प्रवीण ब्रगेट	वरदान	33
25	अनिल कुमार	ऐ ज़िंदगी	33
26	सुमन सिंह	भ्रष्टाचार	34
27	के कट्टबोम्मन	सुंदर मन गोरे रंग से अच्छा है।	35
28	बिमल ए. राज	अदम्य शक्ति	35
29	लोकेश कुमार शाह के आर	भारतीय खाद्य निगम में राजभाषा	36
30	अ दिनेश प्रभु	वोट	36
31	एस भाग्यलक्ष्मी	सबसे भाग्यशाली आलसी भाई	37
32	सुकृति कुमारी	विश्वास संग आना	37
33	कलाकृतियां		38-42
34	उपलब्धियां		42-43
35	तमिलनाडु क्षेत्र में आयोजित विभिन्न गतिविधियां		44-48

डी मोहना प्रिया
सहायक श्रेणी.II(तकनीकी),
मंडल कार्यालय, चेन्नई

पर्यावरण अखंडता–कल के लिए एक बेहतर दुनिया

लोग हमेशा सोचते हैं कि अपने बच्चों के लिए एक बेहतरदुनिया बनाएं, जिसके लिए उन्हें अधिक पैसा कमाने की जरूरत हैं, अपने बच्चे को उत्तम स्कूल, उत्तम विश्वविद्यालय में दाखिला दिलाना, बच्चे को अच्छे पद के लिए दबाव डालना आदि। लेकिन हर किसी को यह महसूस करना चाहिए कि आपके सभी प्रयासों के बावजूद, आपका बच्चा पौधों के बजाय मिट्टी में प्लास्टिक से भरे कचरे से भरी दुनिया में रहने जा रहा है। अच्छी तरह से सोचे, क्या आप वास्तव में चाहते हैं कि आपके बच्चों के साथ ऐसा हो? हम सभी जानते हैं कि प्लास्टिक प्रदूषण सबसे अधिक दबाव वाले पर्यावरणीय मुद्दों में से एक है। फिर भी हम इस समस्या को नजरंदाज कर रहे हैं, यह महसूस किए बिना कि यह वास्तव में युवा पीढ़ी पर एक बड़ा प्रभाव डाल रहा है। क्या हम उन बच्चों के साथ अन्याय नहीं कर रहे हैं? हमें मुफ्त में अच्छी हवा में सांस लेने को मिलती है और उन्हें भविष्य में केवल डिब्बे में सांस लेने योग्य हवा मिलेगी। डिस्पोजेबल प्लास्टिक उत्पादों का तेजी से बढ़ता उत्पादन उनसे निपटने की दुनिया की क्षमता को प्रभावित करता है। बढ़ते उत्पादन का कारण मांग में वृद्धि है। हमलोग अपनी सुविधा के लिए इसकी मांग करते हैं। हम इसे खरीदते हैं, इसका उपयोग करते हैं, इसे अनंत समय के लिए फेंक देते हैं :–

प्लास्टिक अच्छा या बुरा : प्लास्टिक ने जीवन रक्षक उपकरणों के साथ दवा में क्रांति ला दी, अंतरिक्ष यात्रा को संभव बना दिया, कारों और जेट विमानों को हल्का कर दिया–ईंधन और प्रदूषण की बचत–और हेलमेट, इनक्यूबेटर और स्वच्छ पेयजल के लिए उपकरणों के साथ जीवन बचाया।

हालांकि, प्लास्टिक की सुविधा ने एक फेंकने की संस्कृति को जन्म दिया जो सामग्री के अंधेरे पक्ष को प्रकट करता है आज, एकल–उपयोग वाले प्लास्टिक हर साल उत्पादित प्लास्टिक का 40 प्रतिशत हिस्सा हैं। इनमें से कई उत्पाद, जैसे प्लास्टिक बैग और खाद्य रैपर, केवल मिनटों से घंटों तक का जीवनकाल है, फिर भी वे सैकड़ों वर्षों तक पर्यावरण में बने रह सकते हैं। अब तक निर्मित सभी प्लास्टिक का आधा हिस्सा पिछले 15 वर्षों में बनाया गया है।

जल निकायों को नुकसान :– हर साल, लगभग 8 मिलियन टन प्लास्टिक कचरा तटीय देशों से महासागरों में जाता है। महासागरों में अधिकांश प्लास्टिक कचरा, पृथ्वी का अंतिम सिंक, भूमि से बहता है। कचरा प्रमुख नदियों द्वारा समुद्र में भी ले जाया जाता है, जो कन्वेयरबेल्ट के रूप में कार्य करते हैं, जैसे ही वे नीचे की ओर बढ़ते हैं, अधिक से अधिक कचरा उठाते हैं। जल निकायों में प्लास्टिक जल निकासी को अवरुद्ध करके और जलमार्गों के प्राकृतिक पारिस्थितिकी तंत्र को प्रभावित करके दुर्गंध पैदा करता है। यह पानी को मनुष्यों और जानवरों के लिए अस्वास्थ्यकर बना देता है, जिससे पीने के पानी की कमी हो जाती है। प्लास्टिक कचरा एक बार समुद्र की धाराओं में फंस जाता है, इसे दुनिया भर में ले जाया जा सकता है।

वन्य जीवन को नुकसान :– पक्षियों से लेकर मछलियों और अन्य समुद्री जीवों तक, हर साल लाखों जानवर प्लास्टिक से मारे जाते हैं। समुद्री पक्षी की लगभग हर प्रजाति प्लास्टिक खाती है। जानवरों की अधिकांश मौतें उलझन या भुखमरी के कारण होती हैं। माइक्रो प्लास्टिक्स 100 से अधिक जलीय प्रजातियों में पाए गए हैं, जिनमें मछली, झींगा और मसल्स शामिल हैं जो हमारे खाने की प्लेटों के लिए नियत हैं। हाथियों, लकड़बग्घे, ज़ेबरा, बाघ, ऊंट, मवेशी और अन्य बड़े स्तनधारियों सहित भूमि–आधारित जानवरों द्वारा प्लास्टिक का सेवन किया गया है, कुछ मामलों में मृत्यु का कारण बनता है।

एक बार समुद्र में, प्लास्टिक कचरे को पुनः प्राप्त करना मुश्किल है। इसका समाधान यह है कि प्लास्टिक कचरे को नदियों और समुद्रों में प्रवेश करने से रोका जाए। यह बेहतर अपशिष्ट प्रबंधन प्रणालियों और रीसाइक्लिंग, बेहतर उत्पाद डिजाइन के साथ पूरा किया जा सकता है जो डिस्पोजेबल पैकेजिंग के छोटे जीवन को ध्यान में रखता है, और अनावश्यक एकल–उपयोग प्लास्टिक के निर्माण में कमी करता है।

माइक्रो प्लास्टिक :– एक बार समुद्र में, सूरज की रोशनी, हवा और लहर की कार्रवाई प्लास्टिक कचरे को छोटे कणों में तोड़ देती है, अक्सर एक इंच के पांचवें हिस्से से भी कम, माइक्रो प्लास्टिक्स बनाती है। ये तथा कथित माइक्रो प्लास्टिक्स पूरे पानी के स्तंभ में फैल गए और दुनिया के हर कोने में पाए गए हैं, माउंट एवरेस्ट, सबसे ऊंची चोटी से लेकर मारियाना ट्रेंच, सबसे गहरे गर्त तक है। माइक्रो प्लास्टिक्स छोटे और छोटे टुकड़ों में टूट रहे हैं। इस बीच, प्लास्टिक माइक्रो फाइबर नगरपालिका पेयजल प्रणालियों में पाए गए हैं और हवा के माध्यम से बह रहे हैं।

पर्यावरण अखंडता :– हम सोच सकते हैं कि हम क्या कर सकते हैं जब राज्य में कचरा उठाना सरकार का कर्तव्य है। हर व्यक्ति में एक छोटा सा बदलाव राष्ट्र में एक बड़ा बदलाव लाएगा। जैसाकि महात्मा गांधी ने एक बार कहा था, हमें वह बदलाव होना चाहिए जिसे हमें देखने की जरूरत है। प्रत्येक व्यक्ति अपने द्वारा बनाए गए कचरे के लिए जिम्मेदार है। राष्ट्रीय अखंडता के साथ–साथ सभी को पर्यावरण अखंडता का भी अभ्यास करना चाहिए।

हर इंसान को यह समझना चाहिए कि यह दुनिया केवल उसके लिए नहीं है। प्रत्येक व्यक्ति को यह महसूस करना चाहिए कि वह इस धरती का सिर्फ एक हिस्सा है और इसके शीर्ष पर नहीं है। हर दूसरे जानवर, कीट, पक्षी को इस धरती पर बिना किसी खतरे के रहने का समान अधिकार है जैसा कि वह करता है। इस धरती पर एक उन्नत प्राणी के रूपमें यह स्वाभाविक जिम्मेदारी है कि हमें अपने जीवन में प्लास्टिक के उपयोग को कम करना चाहिए जो मनुष्यों सहित अन्य जानवरों को मार रहा है।

हम सभी खरीदारी के लिए कपड़े के थैले का उपयोग करने से अपना पहला कदम शुरू कर सकते हैं, पानी की बोतलों जैसे प्लास्टिक के उपयोग से बच सकते हैं, स्थानीय विक्रेताओं और पर्यावरण के अनुकूल सुपर मार्केट को प्रोत्साहित कर सकते हैं, टेकअवे को उन अच्छे पुराने दिनों की तरह स्टील के बक्से में ले जाया जा सकता है और अनावश्यक रूप से ऑनलाइन भोजन ऑर्डर नहीं करने से पैकेजिंग सामग्री का कचरा लैंड फिल में समाप्त हो जाता है, जब तक कि यह बहुत आवश्यक न हो, टेकअवे के बजाय डाइन–इन का विकल्प चुनें, और तीन टेकअवे (Reduse] Reuse and Recycle/पुनःउपयोग री सायकल कम) आदि का पालन करके, हमारे छोटे प्रयास इस दुनिया को हमारे बच्चों के रहने के लिए एक बेहतर जगह बनने में मदद कर सकते हैं।

लाचार

कहते हैं कि खुद्दार मेरे शहर का फाको से मर गया।
राशन जो आ रहा था, वो अफसर के घर चला गया।
चढ़ती रही मजार पर चादर तो
बेशुमार, बाहर जो एक फकीर
था सर्दी से मर गया।
रोटी अमीर–ए–शहर के कुत्तों ने
छीन ली
फाका, गरीब ए शहर के बच्चों में बट गया।
चेहरा बता रहा था कि मारा है भुख ने।
हाकिम ने कह दिया कि कुछ
खा के मर गया।

सत्येंद्र प्रताप राव
उप महाप्रबंधक(विधि)
क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नई

डी. वेंकटेश्वरलू
प्रबंधक(डिपो)
मंडल कार्यालय, तूतीकोरिन

राष्ट्रीय एकता

परिचय : राष्ट्र के लिए, राष्ट्रीय एकता, अखंडता के महत्व को समझते हुए देशवासियों के हृदय में एकता की भावना प्रवाहित करने तथा राष्ट्रीय एकता को गंभीरता से लेने के लिए राष्ट्रीय एकता दिवस और राष्ट्रीय एकता सप्ताह दोनों हीं अगल–अगल समय पर आयोजित किया जाता है। दोनों समारोह का उद्देश्य एक है राष्ट्रीय एकता के महत्व के प्रति जन जागरूकता फैलाना।

राष्ट्रीय एकता दिवस : सरदार वल्लभ भाई पटेल के देश को एक सूत्र में पिरों के रखने की सोच को सदैव देशवासियों के स्मृति में जिंदा रखने के लिए, 2014 में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा 31 अक्टूबर को वल्लभ भाई पटेल के जयंती को राष्ट्रीय एकता दिवस के रूप में मनाने की घोषणा की गई।

राष्ट्रीय एकता सप्ताह : राष्ट्रीय एकता और अखंडता को उत्सव के रूप में पूरे सप्ताह मनाया जाता है। इससे संबंधित सूची निम्नवत् है।

19 नवम्बर राष्ट्रीय एकता दिवस।
20 नवम्बर अल्पसंख्यक कल्याण दिवस।
21 नवम्बर भाषाई सद्भाव दिवस।
22 नवम्बर कमजोर वर्गों का दिवस।
23 नवम्बर सांस्कृतिक एकता दिवस।
24 नवम्बर महिला दिवस।
25 नवम्बर संरक्षण दिवस।

देश को बाहरी शक्ति से बचाने के लिए – राष्ट्रीय एकता की आवश्यकता : देश को बाह्य (बाहरी) शक्ति से बचाने के लिए सभी देशवासियों में राष्ट्रीय एकता की भावना का होना बहुत जरूरी है। इतिहास गवाह है जब–जब राष्ट्र में राष्ट्रीय एकता को ताक पर रखा गया है तब–तब किसी बाहरी शक्ति ने इसका लाभ उठा कर हमें तोड़ कर रख दिया है। भिन्न–भिन्न समय पर हमारे देश में अनेक शासकों ने शासन किया। जिससे विभिन्न जाति भारत में फल–फूल पायी।

संचार का कोई सशक्त माध्यम न होने के वजह से ब्रिटिश सरकार को यह अनुमान लग गया की वह हमें जाति और धर्म के नाम पर बहुत आसानी से तोड़ सकते हैं और उन्होंने यही किया। हमारे देश के स्वतंत्रता सैनानियों को इस बात का आभास होने पर उन्होंने सर्वप्रथम राष्ट्र को एकता के सूत्र में बांधा। कुछ तो जेल से ही अपने कलम के दम पर देश में राष्ट्रीय एकता के महत्व को बताने चल पड़े।

जंग जीतने के लिए : राष्ट्रीय एकता : राष्ट्रीय एकता की भावना निहित होने पर देश कम सैन्य शक्ति में भी विजय प्राप्त कर सकता है। इसके विपरीत अनेकों सैनिक तथा हथियार के होने पर भी एकता के अभाव में राष्ट्र जीती हुई बाजी हार जाता है।

निष्कर्ष : राष्ट्रीय एकता के महत्व को समझना हमारे लिए बहुत महत्वपूर्ण है। इसके अभाव में हम पुनः दासतापूर्ण जीवन व्यतीत करने के लिए प्रतिबद्ध हो सकते हैं। राष्ट्र से हम हैं, हम से राष्ट्र नहीं! राष्ट्र के न होने पर हमारा कोई अस्तित्व नहीं इसलिए राष्ट्रीय एकता और अखंडता को बनाए रखना हमारा कर्तव्य है।

अरुणिमा
सुपुत्री श्री अरुण कुमार
उप महाप्रबंधक(विधि/राजभाषा)
क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नई

मानसिक स्वास्थ्य पर कार्यभार का प्रभाव : एक व्यापक विश्लेषण

परिचय :– आज के तेजगति और मांगवाले कार्य वातावरण में, व्यक्ति अक्सर खुद को भारी कार्यभार और समय सीमा को पूरा करने के लिए बढ़ते दबाव से बोझिल पाते हैं। इस अत्यधिक कार्यभार का मानसिक स्वास्थ्य पर हानिकारक प्रभाव पड़ सकता है, जिससे तनाव, चिंता और अन्य संबंधित समस्याएं हो सकते हैं। इस लेख में, हम मानसिक स्वास्थ्य पर कार्यभार के प्रभाव के विभिन्न पहलुओं पर विचार करेंगे, दो संदर्भ लेखों के निष्कर्षों की खोज करेंगे और विषय का व्यापक विश्लेषण प्रदान करेंगे।

स्वास्थ्य देखभाल प्रणाली में कार्यभार का महत्व :– पहला संदर्भ का लेख नर्सों के सामने उनके कार्यभार के कारण स्वास्थ्य देखभाल प्रणाली में आनेवाली चुनौतियों पर प्रकाश डालता है। नर्सों, स्वास्थ्य देखभाल प्रणाली में सबसे बड़े कार्यबल के रूप में, अक्सर खुद को लंबे घंटों तक काम करने, अपर्याप्त जनशक्ति और रोगी की मृत्यु के भावनात्मक तनाव का सामना करते हैं। तेहरान में एक स्पेशलिटी और सब–स्पेशलिटी अस्पताल में 300 नर्सों पर किए गए अध्ययन का उद्देश्य कार्यभार और शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य, नींद संबंधी विकारों और व्यक्तिगत और पारिवारिक समस्याओं पर इसके प्रभावों के बीच संबंधों का एक मॉडल स्थापित करना है।

मानसिक स्वास्थ्य पर कार्यभार का नकारात्मक प्रभाव :– अध्ययन से पता चला कि कार्यभार का नौकरी से तनाव, मानसिक स्वास्थ्य, शारीरिक स्वास्थ्य, नींद की गुणवत्ता और व्यक्तिगत और पारिवारिक समस्याओं पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। निष्कर्षों ने संकेत दिया कि कार्यभार में वृद्धि के कारण नौकरी के तनाव का उच्च स्तर हुआ, जो बदले में मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य, नींद की गुणवत्ता और व्यक्तिगत और पारिवारिक कल्याण को प्रभावित किया। अध्ययन के परिणामों ने मानसिक स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभावों को कम करने के लिए कार्यभार को प्रभावी ढंग से प्रबंधित करने के महत्व पर जोर दिया।

शिफ्ट कार्य और वर्कलोड पर इसका प्रभाव :– संदर्भ लेख द्वारा संबोधित एक अन्य महत्वपूर्ण पहलू कार्यभार और मानसिक स्वास्थ्य पर शिफ्ट कार्य का प्रभाव है। लेख इस बात पर जोर देता है कि गैर–पारंपरिक कार्य घंटों की विशेषता वाले शिफ्ट वर्क स्वास्थ्य देखभाल प्रणाली में एक महत्वपूर्ण चुनौती है। शिफ्ट कार्य की मांग प्रकृति, लंबे और गैर–मानक कार्य घंटों के साथ, अक्सर नर्सों के बीच तनाव, नींद संबंधी विकार और विभिन्न शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य जटिलताओं की ओर ले जाती है।

मध्यस्थ के रूप में नौकरी तनाव की भूमिका दूसरा संदर्भ लेख जो कार्यभार और मानसिक स्वास्थ्य पर इसके प्रभाव के बीच मध्यस्थ के रूप में नौकरी के तनाव की भूमिका पर केंद्रित है। अध्ययन ने उच्च विद्यालय के छात्रों के बीच कार्यभार की उनकी धारणा और उनके मानसिक कल्याण पर इस के प्रभावों का आकलन करने के लिए एक सर्वेक्षण किया। परिणामों से पता चला किछात्रों का एक महत्वपूर्ण प्रतिशत उनके कार्यभार से अभिभूत महसूस हुआ, जिससे अतिरिक्त तनाव और आरामदायक गतिविधियों और समाजीकरण के लिए सीमित समय मिला।

छात्रों के लिए मानसिक स्वास्थ्य निहितार्थ :– अध्ययन में पाया गया कि अत्यधिक कार्यभार ने छात्रों क मानसिक स्वास्थ्य को नकारात्मक रूप से प्रभावित किया, जिससे तनाव का स्तर बढ़ा, सीमित सामाजिक जीवन और अवकाश के समय से समझौता हुआ है। मांगवाले स्कूल दिनों में, पाठ्येतर गतिविधियों और होमवर्क को पूरा करने की आवश्यकता के साथ, छात्रों को छूट और आत्म–देखभाल के लिए न्यूनतम समय के साथ छोड़ दिया। पर्याप्त नींद की कमी ने स्थिति को और बढ़ा दिया, क्योंकि नींद से वंचित होने का मानसिक कल्याण पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

संतुलित कार्यभार की आवश्यकता :– दोनों संदर्भ लेख व्यक्तियों के मानसिक स्वास्थ्य की रक्षा के लिए कार्यभार चिंताओं को संबोधित करने के महत्व को उजागर करते हैं। नर्सों के मामले में, कार्यभार का प्रभावी ढंग से प्रबंधन नौकरी के तनाव को कम करने और शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य जटिलताओं को कम करने में मदद कर सकता है। इसी तरह, छात्रों के लिए, शैक्षिक आवश्यकताओं, पाठ्येतर गतिविधियों और अवकाश के बीच संतुलन पाना उनकी भलाई सुनिश्चित करने के लिए महत्वपूर्ण है।

प्रणालीगत परिवर्तन की मांग :– दूसरा संदर्भ लेख इस बात पर जोर देता है कि कार्यभार का मुद्दा और मानसिक स्वास्थ्य पर इसका प्रभाव प्रणालीगत है और इसके लिए शिक्षकों, विभाग के अध्यापकों, प्रशासकों और परामर्श केंद्रों के बीच सहयोग की आवश्यकता है। छात्रों, माता–पिता और शिक्षकों की चिंताओं को दूर करने और शैक्षिक प्रणाली के भीतर एक स्वस्थ कार्य वातावरण को बढ़ावा देनेवाले परिवर्तनों को लागू करने के लिए खुला और ईमानदार संवाद आवश्यक है।

संगठनों और शैक्षिक संस्थानों के लिए सिफारिशें :– संदर्भ लेखों के निष्कर्षों के आधार पर, मानसिक स्वास्थ्य पर कार्यभार के नकारात्मक प्रभाव को कम करने के लिए कई सिफारिशें की जा सकती हैं :

I. नर्सों पर बोझ को कम करने और बेहतर कार्य–जीवन संतुलन को बढ़ावा देने के लिए स्वास्थ्य देखभाल प्रणाली में प्रभावी कार्यभार प्रबंधन रणनीतियों को लागू करना।

II. ऐसी नीतियां विकसित करना जो अत्यधिक कार्य घंटों को सीमित करती हैं और शिफ्ट श्रमिकों के लिए सहायता प्रणाली प्रदान करती हैं।

III. कार्यभार चिंताओं को दूर करने और शैक्षिक संस्थानों में एक स्वस्थ कार्य वातावरण सुनिश्चित करने के लिए छात्रों, माता–पिता, शिक्षकों और प्रशासकों के बीच खुले संचार को बढ़ावा देना।

IV. मानसिक स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए व्यक्तियों को आत्म–देखभाल, तनाव प्रबंधन और पर्याप्त नींद के मूल्य के महत्व पर शिक्षित करें।

V. तनाव से संबंधित मुद्दों का सामना करनेवाले व्यक्तियों के लिए संसाधन और सहायता प्रदान करना, जैसे परामर्श सेवाएं और मानसिक स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रम।

निष्कर्ष :– मानसिक स्वास्थ्य पर कार्यभार का प्रभाव विभिन्न क्षेत्रों में एक महत्वपूर्ण चिंता का विषय है, जिसमें स्वास्थ्य देखभाल प्रणाली से लेकर शैक्षिक संस्थान शामिल हैं। दोनों संदर्भ लेखों ने व्यक्तियों के मानसिक कल्याण पर अत्यधिक कार्यभार के नकारात्मक परिणामों पर प्रकाश डाला है। इन चिंताओं को दूर करने के लिए कार्यभार प्रबंधन और रणनीतियों को लागू करने के महत्व को पहचानकर, संगठन और शैक्षिक संस्थान स्वस्थ कार्य वातावरण बना सकते हैं जो मानसिक स्वास्थ्य और समग्र कल्याण को प्राथमिकता देते हैं। व्यक्तियों के मानसिक स्वास्थ्य को प्राथमिकता देना और दीर्घकालिक सफलता और खुशी सुनिश्चित करने के लिए काम और जीवन के लिए एक संतुलित दृष्टिकोण को बढ़ावा देना महत्वपूर्ण है।

संदर्भ लेख
https://www.ncbi.nlm.nih.gov/pmc/articles/PMC10141747/
https://tower.mastersny.org/8245/opinion/workload-negatively-affects-mental-health/

रतन सिंह मीना
मंडल प्रबंधक
मंडल कार्यालय, वेल्लूर

राजस्थान के किलों की एक झलक

राजस्थान 250 से अधिक किलों का घर है जो राजपूत शासकों के लिए आश्रय गृह के रूप में काम करते थे जो राजपूत और मुस्लिम शासकों की विस्तारवादी नीतियों में भी शामिल थे। जिनमें कुछ महत्वपूर्ण किले निम्नलिखित है :– 1. चित्तौड़गढ़ किला : चित्तौड़गढ़ का किला भारत के सबसे बड़े किलों में से एक है। इस किले को सातवीं शताब्दी में बनवाया गया था। रानी पद्मिनी और राजा रतन रावल सिंह की कभी न भुलाई जा पाने वाली प्रेम कहानी को चित्तौड़गढ़ का किला बयां करता है। रानी पद्मिनी को जीतने के लिए राजा रतन रावल सिंह को काफी परीक्षाएं पास करनी पड़ी थीं। चित्तौड़गढ़ दुर्ग भारत का सबसे विशाल दुर्ग है। यह राजस्थान के चित्तौड़गढ़ में स्थित है चित्तौड़ गढ़ के किले को मौर्य राजवंश के सम्राट चित्रांगद मौर्य ने बनवाया था। यह एक विश्व विरासत स्थल है। चित्तौड़ मेवाड की राजधानी थी। यह इतिहास की सबसे खूनी लड़ाईयों का गवाह है। इसने तीन महान आख्यान और पराक्रम के कुछ सर्वाधिक वीरोचित कार्य देखे हैं जो अभी भी स्थानीय गायकों द्वारा गाए जाते हैं। चित्तौड़गढ़ किला परम्परागत लाइट एवं साउंड शो में चित्तोड़गढ़ दुर्ग की स्थापना की कहानी, आक्रान्तो द्वारा दुर्ग पर आक्रमण, दुर्ग को लम्बे समय तक घेरने की कहानी, रानी पदमिनी के सूझबूझ, युद्ध कौशल की कहानी, गौरा बादल के वीरता और बलिदान की गाथा, रानी पद्मिनी द्वारा अन्य वीरांगनाओ के साथ किये गये जोहर आदि का बहुत रोचक चित्रण किया गया है। चित्तौड़ के दुर्ग को 21 जून, 2013 में युनेस्को विश्व विरासत स्थल घोषित किया गया। चित्तौड़ दुर्ग को राजस्थान का गौरव एवं राजस्थान के सभी दुर्गो का सिरमौर भी कहते हैं द्य मेसा पठार पर स्थित यह किला दिल्ली से मालवा और गुजरात मार्ग पर स्थित होने के कारण सामरिक महत्व का है। वीर विनोद के अनुसार इस किले का निर्माण मौर्य राजा चित्रांग ने करवाया था और इसका नाम चित्रकूट रखा गया। बाद के वर्षों में मेवाड़ के बप्पा रावल ने मौर्य मानमोरी को हराया और किले पर कब्जा कर लिया। अलाउद्दीन खिलजी ने इसका नाम खिजराबाद रखा।

2. भानगढ़ किला : यह किला सत्रहवीं शताब्दी में बनवाया गया था। इस किले का निर्माण मान सिंह के छोटे भाई राजा माधो सिंह ने करावाया था। राजा माधो सिंह उस समय अकबर के सेना में जनरल के पद पर तैनात थे। उस समय भानगड़ की जनसंख्या तकरीबन 10,000 थी। भानगढ़ अलवर जिले में स्थित एक शानदार किला है जो कि बहुत ही विशाल आकार में तैयार किया गया है।

चारो तरफ से पहाड़ों से घिरे इस किले में बेहतरीन शिल्पा कलाओं का प्रयोग किया गया है। इसके अलावा इस किले में भगवान शिव, हनुमान आदी के बेहतरीन और अति प्राचीन मंदिर विध्यमान है। इस किले में कुल पांच द्वार हैं और साथ साथ एक मुख्य दीवार है। इस किले में दृण और मजबूत पत्थरों का प्रयोग किया गया है जो अति प्राचीन काल से अपने यथा स्थिति में पड़े हुये हैं।

फिलहाल इस किले की देख रेख भारत सरकार द्वारा की जाती है। किले के चारों तरफ भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) की टीम मौजूद रहती हैं। 4. आमेर किलाः यह इमारत जयपुर में अपनी तरह की सबसे बड़ी इमारत है। दिलचस्प बात यह है कि यह किला भारत में प्रचलित सांस्कृतिक मेलजोल का एक प्रमुख प्रमाण बना हुआ है। उदाहरण के लिए, किले का नाम भगवान शिव के हिंदू मंदिर से लिया गया है। दूसरी ओर, इसका वास्तुशिल्प निर्माण–विशेष रूप से इसके दर्पण महल या शीश महल के लिए–इस्लामी और राजस्थानी सौंदर्यशास्त्र संलयन की एक शानदार अभिव्यक्ति है। 5. रणथंभौर किलाः सवाई माधोपुर में स्थित किला रणनीतिक महत्व रखता है क्योंकि यह दिल्ली मार्ग पर स्थित है। आठवीं शताब्दी में चौहान शासक द्वारा निर्मित, 1155 में अलाउद्दीन और हम्मीर देव चौहान के बीच युद्ध देखा गया था। अबू फजल ने इसे एक बख्तरबंद किला कहा था।

6. कुम्भलगढ़ किलाः मेवाड़ और मारवाड़ की सीमा पर स्थित महाराणा कुम्भा द्वारा निर्मित। मुख्य वास्तुकार मंडन था। कुंभलगढ़ किले की 36 किलोमीटर लंबी दीवार इसे चीन की प्रतिष्ठित महान दीवार के बाद अपनी तरह की दूसरी सबसे लंबी दीवार बनाती है। उदय सिंह का राज्याभिषेक और प्रताप का जन्म यहीं हुआ था। किले का ऊपरी छोर कटारगढ़ है। अबू के फजल ने कहा कि यह इतनी ऊंचाई पर बना है कि ऊपर देखने पर पगड़ी गिर सकती है।

7. जैसलमेर किलाः पीले पत्थर से बना त्रिकुट पहाड़ी पर स्थित जैसलमेर किले को सोनार किला या स्वर्ण किला भी कहा जाता है। यह किला दूर रेगिस्तान में स्थित है इसीलिए कहा जाता है कि वहां तक पहुंचने के लिए लोहे के पैरों की जरूरत पड़ती है। 1155 ई. में भाटी शासक राव जैसल द्वारा निर्मित। दूर से देखने पर यह रेगिस्तान में लंगर डाले हुए जहाज जैसा प्रतीत होता है। यह बिना चूने के लकड़ी की छत से बनी है। यह अपने ढाई साका के लिए प्रसिद्ध है।

8. बाला किला सिटी पैलैस परिसर अलवर के पूर्वी छोर की शान है। इसके पर अरावली की पहाडियां है और इन पहाडियों पर बाल किला बना हुआ है। किले की दीवार पूरी पहाडी पर फैली हुई है जो हरे–भरे मैदानों से गुजरती है। पूरे अलवर शहर में यह सबसे पुरानी इमारत हे! बाला किला जिसे अलवर किले के नाम से भी जाना जाता है, अलवर शहर में छंद की पहाड़ी पर स्थित है। इस किले का निर्माण 1492 में हसन खान मेवाती ने करवाया था। यह स्मारक अपने चिनाई के माक और भव्य संरचनात्मक डिजाइन के लिए प्रसिद्द है। कुछ किलों के प्रकार

1.औडुक किलाः इसे जल किला भी कहा जाता है। पानी से घिरा हुआ उदाहरण गागरोन किला

2.पहाड़ी किला या गिरि किलाः यह एक ऊँचे पर्वत पर स्थित है, राजस्थान के अधिकांश किले इसी श्रेणी में आते हैं।

3.धन्वन किला या रेगिस्तानी किलाः यह रेगिस्तान या रेत के टीलों से घिरा हुआ है उदाहरण के लिए जैसलमेर किला

4.वन किलाः यह जंगल के बीच स्थित है या घनी छतरी से घिरा हुआ है उदाहरण सिवानाकिला

5.ऐरण किलाः कठिन भूभाग, गहरी खुदाई, सिंहासन, पत्थरों के कारण यह दुर्गम है। उदाहरण चितौड़ और जालौर किला

6.पारीक किलाः किले की दीवार के चारों ओर गहरी खाई से घिरा हुआ हैय भरतपुर, बीकानेर के जूनागढ़

7.परिध किलाः यह बड़ी दीवारों से घिरा हुआ है उदाहरणः चितौड़ और जैसलमेर किले

8.सेना किलाः जहां सैनिकों को युद्ध की योजना और रणनीति के लिए रखा जाता है उदाहरण के लिए अजमेर का मैगजीन किला

9.सहाय किलाः जहां लोग अपनी बहादुरी और मधुर संबंधों के कारण रहते हैं।

'राजस्थान में आप लोग कभी भी घूमने का मन हो उपरोक्त किलो को अवश्य देखें । इन किलों को देखने लिए राजस्थान की धरती को देखना जरूरी है । "धन्यवाद"

कृष्णा कुमार पी सी
सहायक श्रेणी.I(सतर्कता)
मंडल कार्यालय, कडलूर

आत्म अनुशासन

आत्म–अनुशासन का अर्थ है आत्म–नियंत्रण, जो आपको आंतरिक शक्ति देता है और खुद को, कार्यों और प्रतिक्रियाओं को नियंत्रित करने का एक तरीका देता है। सफलता प्राप्त करने के लिए यह सबसे महत्वपूर्ण और उपयोगी कौशलों में से एक है और यह गुण हर किसी में होना चाहिए। कुछ लोगों में आत्म–अनुशासन स्वाभाविक रूप से आता है और कुछ लोग थोड़े प्रयास से इसे हासिल कर सकते हैं। किया गया प्रयास सार्थक है क्योंकि यह जीवन को बेहतरी के लिए बदल देता है। इसका मतलब सिर्फ आत्म–नियंत्रण करना है। जो व्यक्ति नियंत्रण में रहता है, उसमें अपने कार्यों और प्रतिक्रियाओं की जिम्मेदारी लेने की क्षमता होती है।

अपना लक्ष्य निर्धारित करना :– अनुशासित जीवन जीने की दिशा में पहला कदम लक्ष्य निर्धारित करना है। लक्ष्य आपको एक स्पष्ट विचार देते हैं कि क्या हासिल करने की आवश्यकता है। अपने लक्ष्यों के लिए हमेशा एक समयसीमा निर्धारित करनी चाहिए। यह एक प्रेरक शक्ति के रूप में कार्य करता है और आपको कड़ी मेहनत करने के लिए प्रेरित करता है। अल्पकालिक और दीर्घकालिक दोनों लक्ष्य निर्धारित करना और उन्हें प्राप्त करने के लिए एक सुविचारित योजना बनाना एक अच्छा विचार है।

एक दिनचर्या निर्धारित करें :– जो लोग एक दिनचर्या निर्धारित करते हैं और उसका प्रतिदिन पालन करते हैं वे अधिक अनुशासित जीवन जीते हैं। उन सभी कार्यों को सूचीबद्ध करने का सुझाव दिया जाता है जिन्हें आपको एक निश्चित दिन में पूरा करने की आवश्यकता होती है। उन्हें उनकी प्राथमिकता के क्रम में लिखें, प्रत्येक के लिए एक समयरेखा निर्धारित करें और उसके अनुसार कार्य करें। यह व्यवस्थित और अनुशासित जीवन जीने का एक अच्छा तरीका है।

ध्यान भटकाने वाली चीजों से दूर रहें :– प्रौद्योगिकी से प्रेरित इस दुनिया में, ऐसी कई चीजें हैं जो हमें विचलित कर सकती हैं और हमारे जीवन को नियंत्रित कर सकती हैं। हमारे मोबाइल फोन, टेलीविजन और चौटिंगऐप्स नए जमाने की कुछ ऐसी चीजें हैं जो आत्म–अनुशासन का अभ्यास करने में एक बड़ी बाधा हैं। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि हम समय पर पढ़ाई, काम करने या सोने के लिए कितने प्रतिबद्ध हैं, हम अपने फोन की बीप से विचलित हो जाते हैं। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म, चौटिंगऐप्स और वेबसीरीज़ बेहद व्यसनी हैं और काम में बाधा डालते हैं। आत्म–अनुशासन का अभ्यास करने के लिए, इन विकर्षणों से दूर रहना महत्वपूर्ण है। जब आप पढ़ाई या काम करने बैठें तो अपने फोन को साइलेंटमोड पर रखें या कुछ दूरी पर रखें। इसी तरह, सोते समय अपना फोन दूर रख दें और पढ़ने के लिए कोई किताब चुनें।

स्वयं को पुरस्कृत करें :– आपके द्वारा प्राप्त किए गए प्रत्येक लक्ष्य के लिए स्वयं को पुरस्कृत करें। यह आपको और अधिक हासिल करने और कड़ी मेहनत करने के लिए प्रेरित करेगा। यह अपने मस्तिष्क को आत्म–अनुशासन विकसित करने के लिए प्रेरित करने का एक अच्छा तरीका है।

दिशा शर्मा
सहायक श्रेणी.II(तकनीकी)
मंडल कार्यालय, चेन्नई

वसुधैव कुटुंबकम

वसुधैव कुटुंबकम एक संस्कृत वाक्यांश है जो सदियों से भारतीय दर्शन और आध्यात्मिकता में उपयोग किया जाता रहा है। ऐसा माना जाता है कि महाभारत और उपनिषद जैसे प्राचीन भारतीय शास्त्रों से उत्पत्ति हुई है, यह सार्वभौमिक भाईचारे और सभी प्राणियों के अंतर्संबंध के विचार को पोषित करता है। भारतीय साहित्य, संगीत और कला में इसके उपयोग के कारण यह वाक्यांश आधुनिक युग में अधिक व्यापक रूप से जाना जाने लगा है।

समय के साथ, वसुधैव कुटुंबकम को भारत की सांस्कृतिक और आध्यात्मिक विरासत के प्रतीक के रूप में देखा जाने लगा है, जो करुणा के मूल्यों, विविधता के प्रति सम्मान और दुनिया में शांति और एकता को बढ़ावा देने की प्रतिबद्धता को दर्शाता है। हालिया वर्षों में वसुधैव कुटुंबकम को अधिक मान्यता और लोक प्रियता प्राप्त हुई है। कई संगठनों, सरकारों और व्यक्तियों ने वसुधैव कुटुंबकम की अवधारणा को वैश्विक सहयोग और समझ को बढ़ावा देने के वाले माध्यम के रूप में अपनाया है। वसुधैव कुटुंबकम एक कालातीत सिद्धांत है, जो सदियों से भारतीय संस्कृति और आध्यात्मिक विरासत का हिस्सा रहा है। सार्वभौमिक भाईचारे और सभी प्राणियों के परस्पर जुड़ाव से इसका संदेश आज भी उतना ही प्रासंगिक है जितना कि पहले था, और सभी के लिए एक बेहतर, अधिक सामंजस्य पूर्ण विश्व का सृजन करने की दिशा में काम करने के लिए व्यक्तियों और संगठनों को प्रेरित करने का काम करता आ रहा है। वसुधैव कुटुंबकम एक संस्कृत वाक्यांश है जिसका अर्थ है विश्व एक परिवार है। इस तरह हम वसुधैव कुटुंबकम के दर्शन को विस्तार दे सकते हैं – विविधता को गले लगाएं – लोगों, संस्कृतियों और विश्वासों में अंतर को स्वीकार करें और उसका जश्न मनाएं। तदानुभूति का अभ्यास करें–दूसरे लोगों के दृष्टिकोण और भावनाओं को समझने की कोशिश करें। दयालुता को बढ़ावा दें–प्यार और सकारात्मकता फैलाएं, और ज़रूरतमंदों की मदद करें। करके दिखाएं – अपने कार्यों से दिखाएं कि आप समस्त मानवता की एकता में विश्वास करते हैं। लोगों को शिक्षित करें–सभी लोगों के परस्पर जुड़ाव के बारे में अपने ज्ञान और विश्वासों को साझा करें और दूसरों को भी ऐसा करने के लिए प्रोत्साहित करें। इन सिद्धांतों को अपने दैनिक जीवन में शामिल करके, आप एक ऐसी दुनिया बनाने में मदद कर सकते हैं जो विविधता को महत्व देती है और उसका सम्मान करती है, और जहा ंहर कोई एक दूसरे से अपनेपन और जुड़ाव की भावना महसूस करता है।

वसुधैव कुटुंबकम की प्रासंगिकता :– वसुधैव कुटुंबकम का दर्शन आज अत्यधिक प्रासंगिक है क्योंकि यह सभी मनुष्यों के बीच उनकी जाति, धर्म या राष्ट्रीयता की परवाह किए बिना एकता और जुड़ाव के विचार पर जोर देता है। शांति को बढ़ावा देता है :– यह पहचान कर किस भी लोग एक वैश्विक परिवार का हिस्सा हैं, यह सहानुभूति और करुणा की भावना को प्रोत्साहित करता है, जिससे शांति और सहयोग के स्तर में बढ़ाया जा सकता है। विविधता के प्रति सम्मान को प्रोत्साहित करता है :– वसुधैव कुटुंबकम का दर्शन विविधता को अपनाकर आपसी सम्मान और समझ को बढ़ावा देता है, जो संघर्षों को कम करने और सद्भाव को बढ़ावा देने में मदद कर सकता है। वैश्विक जिम्मेदारी को बढ़ावा देना :– यह मानते हुए कि एक व्यक्ति के कार्य पूरे विश्व को प्रभावित कर सकते हैं, यह दर्शन वैश्विक जिम्मेदारी की भावना को प्रोत्साहित करता है और व्यक्तियों को ऐसे कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करता है जो न केवल स्वयं को बल्कि दूसरों को भी लाभान्वित करते हैं।

स्थिरता का समर्थन करता है – इस विचार को बढ़ावा देकर किस भी लोग आपस में जुड़े हुए हैं और एक व्यक्ति की भलाई दूसरों की भलाई से जुड़ी हुई है, वसुधैव कुटुंबकम का दर्शन स्थिरता का समर्थन करता है और भविष्य की पीढ़ियों के लिए ग्रह की सुरक्षा को प्रोत्साहित करता है।

वसुधैव कुटुंबकम का दर्शन एकता, सम्मान और जिम्मेदारी को बढ़ावा देता है और इसमें शांति, समझ और स्थिरता को बढ़ावा देकर दुनिया पर सकारात्मक प्रभाव डालने की क्षमता है।

सुब्रमनियन आर
सहायक श्रेणी.III (डिपो)
मंडल कार्यालय, कडलूर

इस आधुनिक युग में सरकारी नौकर

एक सरकारी कर्मचारी की भूमिका परिश्रमपूर्वक, नैतिक रूप से और अटूट प्रतिबद्धता के साथ सार्वजनिक हित की सेवा करने की गहन जिम्मेदारी के साथ आती है। यह जिम्मेदारी केवल एक नौकरी की आवश्यकता नहीं है, बल्कि लोकतंत्र के मूल्यों को बनाए रखने, सरकारी संस्थानों के प्रभावी कामकाज को सुनिश्चित करने और नागरिकों के समग्र कल्याण में योगदान करने के लिए एक मौलिक दायित्व है।

सरकारी सेवकों की एक प्राथमिक जिम्मेदारी अपने कर्तव्यों को निष्पक्षता और बिना किसी पूर्वाग्रह के निष्पादित करना है। उन्हें सरकारी नीतियों और कार्यक्रमों को निष्पक्ष और उचित तरीके से लागू करने, सभी नागरिकों के साथ उनकी पृष्ठभूमि की परवाह किए बिना समान व्यवहार करने, यह सुनिश्चित करने और सार्वजनिक संसाधनों को समान रूप से आवंटित करने और कानून के शासन को बनाए रखने का काम सौंपा गया है।

पारदर्शिता और जवाबदेही सरकारी कर्मचारियों द्वारा वहन की जाने वाली जिम्मेदारियों की एक और आधारशिला है। वे सार्वजनिक संसाधनों और सूचना के संरक्षक हैं, और इस तरह, उन्हें पारदर्शिता के साथ काम करना चाहिए, नागरिकों को जानकारी तक पहुंच प्रदान करनी चाहिए और स्पष्ट संचार के माध्यम से निर्णयों को उचित ठहराना चाहिए। जवाबदेही यह सुनिश्चित करती है कि सरकारी कर्मचारी अपने कार्यों के लिए जवाबदेह हैं, जिससे प्रशासन में जनता का विश्वास बढ़ता है।

सरकारी सेवकों का नैतिक आचरण सर्वोपरि है। ईमानदारी और व्यावसायिकता के उच्चतम मानकों को कायम रखना न केवल एक व्यक्तिगत दायित्व है, बल्कि सरकारी संस्थानों की विश्वसनीयता को बनाए रखने का एक साधन भी है। निर्णय लेने में नैतिक सिद्धांतों का पालन करना, हितों के टकराव से बचना और भ्रष्टाचार का विरोध करना एक मजबूत और भरोसेमंद शासन प्रणाली में योगदान देता है।

सेवा वितरण में दक्षता और प्रभावशीलता भी सरकारी कर्मचारियों की अभिन्न जिम्मेदारी है। उन्हें नागरिकों की जरूरतों को समय पर और कुशल तरीके से पूरा करते हुए सार्वजनिक सेवाओं की गुणवत्ता और जवाबदेही बढ़ाने का प्रयास करना चाहिए। बदलती परिस्थितियों और उभरती सामाजिक माँगों के अनुकूल ढलने के लिए निरंतर सुधार और नवाचार आवश्यक हैं।

सरकारी कर्मचारी राज्य के प्रतिनिधि होते हैं और उनका व्यवहार समग्र रूप से सरकार पर प्रतिबिंबित करता है। इस प्रकार, उन्हें सार्वजनिक सेवा की संस्कृति, नागरिकों की चिंताओं के प्रति जवाबदेही और निरंतर सीखने और पेशेवर विकास के प्रति प्रतिबद्धता विकसित करनी चाहिए।

निष्कर्षतः प्रत्येक सरकारी कर्मचारी की ज़िम्मेदारी उनके कार्य विवरण से कहीं आगे तक फैली हुई है; यह ईमानदारी, पारदर्शिता और दक्षता के साथ सार्वजनिक हित की सेवा करने की प्रतिबद्धता है। इन जिम्मेदारियों को निभाना सरकारी संस्थानों के प्रभावी कामकाज को सुनिश्चित करता है, लोकतांत्रिक मूल्यों को मजबूत करता है, और जिन नागरिकों की वे सेवा करते हैं उनके समग्र कल्याण में योगदान देता है।

कुणाल कुमार
सहायक महाप्रबन्धक(गुणवत्ता नियंत्रण)
क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नई

मैं और मेरी प्यारी बिटिया

मेरी प्यारी बिटिया और मैं एक ऐसे अटूट बंधन को साझा करते हैं जो प्यार, विश्वास और हंसी पर आधारित है। जब उन्होंने अपनी मौजूदगी के साथ मेरे जीवन को चमकाया, तब से ही उन्होंने एक अवर्णनीय खुशी लाई है जो मेरे हर कोने को भर देती है। उनकी आनंदमयी हंसी सबसे अंधेरे दिनों को भी चमका देती है, सादगी में छिपी सुंदरता को याद दिलाती है। हम छुट्टी के दिनों में घंटों साथ खेलते हैं, काल्पनिक खेलों में खुद को ले जाते हैं, दूरस्थ देशों में कल्पनाशील साहसिक यात्राओं पर निकलते हैं। उनमें एक प्राकृतिक जिज्ञासा है जो प्रेरणादायक और प्यारी है – उनकी चाह दुनिया के बारे में जानने की मुझे आश्चर्य में डाल देती है। चाहे वह गहरे सवाल पूछ रही हो या बेतुके किस्से सुना रही हो, उनके साथ हर संवाद मेरे चेहरे पर मुस्कान लाता है और मेरे दिल को गर्म करता है। जब वह बड़ी होती है, तो मुझे अत्यधिक भाग्य महसूस होता है कि मैं उनकी खिली हुई व्यक्तित्व को देख सकता हूँ और उन्हें संकल्प के साथ नए मीलस्टोन पर चढ़ते हुए देख सकता हूँ। मेरी प्यारी छोटी बेटी सचमुच एक उपहार है जो हमारे जीवन में असीम खुशियों को लाता रहता है।

एम बी के सुमन
मंडल प्रबंधक
मंडल कार्यालय, कोयम्बत्तूर

अरुण कुमार आर
सहायक श्रेणी.III(सामान्य)
मंडल कार्यालय, तंजाऊर

हिंदी

हिन्दी भाषा,
हिन्द की भाषा
जन गण मन की है अभिलाषा।
हिन्दी भाषा,
सम्पर्क की भाषा,
जन गण मन की है अभिलाषा।
हिन्दी भाषा,
हृदय की भाषा,
जन गण मन की है अभिलाषा।
हिन्दी भाषा,
मातृभाषा,
जन गण मन की है अभिलाषा।
हिन्दी भाषा,
सब की भाषा,
भारत माँ की है अभिलाषा।

भारत का धड़कन है : हिंदी

उस देश में जहां रंग बिखरे हैं, बहुत उज्ज्वल,
भारत का हृदय धड़कता है हिन्दी में, निर्मल प्रकाश।

गंगा की फुसफुसाहट, एक पवित्र गीत,
हिंदी के आलिंगन से, गूँज की है।

सिल्वर स्क्रीन पर बॉलीवुड की कहानियां,
हिंदी की लय में स्वप्न समाते हैं।

हिमालय की चोटियों से लेकर दक्षिणी तट तक,
अनेकता में एकता, हिन्दी की लोरियां।

मजबूत बुना सांस्कृतिक टेपेस्ट्री,
भारत के ताने–बाने में हिंदी का समावेश है।

अमित कुमार,
सहायक श्रेणी.II (डिपो)
खाद्य भंडारण डिपो, आवडी

आपदा प्रबंधन

आपदा हमेशा नुकसानदायक होती है जिसमें लोगों की जान माल के साथ साथ आवास का भी नुकसान होता है लोगों को विस्थापित होना पड़ता है और यह विस्थापन लोगों को सभी तरफ से बेरोजगारी और प्रतिदिन की समस्याएं उत्पन्न करती हैं हाल में ही आया हुआ चक्रवात मिचौंग इसी का एक ताजा उदाहरण है। समस्या यह है कि इस नए युग में हमलोग सारी संभावनाएं और आपदा की शुरुआत और उसका प्रभाव जानते हुए भी हमलोग पूरी तरीके से उसके ऊपर काबू नहीं पाते हैं कुछ आपदाएं जो प्राकृतिक रूप से होती हैं उनके बारे में पूरा–पूरा पता कर पाना अभी भी हमारे बस की बात नही ंहो पाती हैं और हम जिसका पूर्वानुमान लगते हैं, वह भी असफल हो जाता है जैसे की इस चक्रवात के बारे में सरकार को और उन सभी टीमों को पता था फिर भी वैसे क्षेत्र जिन क्षेत्रों से यह चक्रवात गुजरी है उन क्षेत्रों में लोगों को आवास का काफी नुकसान हुआ है पेड़ पौधे काफी मात्रा में टूटकर सड़कों पर गिरे हुए हैं और वैसे कच्चे मकान जो उतने मजबूत नहीं थे वह भी टूट गए वैसे क्षेत्र जहां पर सरकार के द्वारा पूरी तरीके से बिना जांच परख बनाए गए हैं वैसे क्षेत्र में जल भराव की स्थिति काफी दयनीय है वैसे क्षेत्र में लोगों का घर से निकलना काफी मुश्किल है यहां तक की लोगों के घर का सामान इलेक्ट्रॉनिक और फर्नीचर जो नीचे रखे हुए हैं थे वह पूरे बर्बाद हो गए और पीने का पानी तथा दैनिक कार्य भी लोगों का करना मुश्किल हो गया है आखिर क्यों इसलिए क्योंकि बारिश उसे स्तर से ज्यादा हुई जितना उसे क्षेत्र के नाले निकल सकती थी। इस चक्रवात के कारण कई क्षेत्रों में पेड़ पौधों को टूटने, पुराने बिजली के खंभों के कारण बिजली की आपूर्ति में बाधा उत्पन्न हुई ।

आपदा प्रबंधन एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है जो संभवतः हर साल दुनियाभर में कई प्रकार की आपदाओं से जुड़ी समस्याओं को दूर करने में मदद करती है। आपदा कुछ ऐसा होता है जिसमें आपके पास संकट का सामना करने के लिए पर्याप्त समय नही ंहोता है और इससे जीवन और संपत्ति का नुकसान होता है। इसलिए, आपदा प्रबंधन आवश्यक है ताकि आपको आपदाओं से निपटने के लिए अच्छी तैयारी और उचित सुविधाएं मिल सकें।

आपदा प्रबंधन के लक्ष्यों में से एक है कि वह लोगों को एक सुरक्षित और सुरक्षित स्थान प्रदान कर सके जहां उन्हें आपदाओं से बचने के लिए संभव होता है। इसके लिए, सरकार और अन्य संगठन आपदा प्रबंधन योजनाएं तैयार करते हैं जो लोगों को आपदा से संबंधित संकटों से बचाने में मदद करती हैं।

आपदा प्रबंधन में अन्य लक्ष्यों में से एक है कि इससे आपदाओं के प्रभाव को कम किया जा सके। इसके लिए, लोगों को उचित जागरूकता दी जाती है ताकि आने वाले समय में या भविष्य में कभी किसी प्रकार की आपदा की स्थिति में होने वाले संभावित जान और माल के नुकसान को कम से कम किया जा सके और राहत कार्यों में तेज़ी लाई जा सके।

आपदा प्रबंधन मुख्य रूप से एक तरीका है जिससे हम होने वाले खतरों को रोक तो नहीं सकते लेकिन इसकी वजह से होने वाले जान और माल के नुकसान को कम से कम ज़रूर कर सकते हैं।

एस. भाग्यलक्ष्मी
स.श्रे.I(तकनीकी)
क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नई

सच्ची भक्ति

एक समय की बात है, एक गाँव में रघुदेव नाम का एक गरीब किसान रहता था। वह भगवान गणेश के बहुत बड़े भक्त थे। प्रतिदिन वह प्रसाद रखकर पूरे मन से पूजा करते थे, फिर भी उनकी दरिद्रता दूर नहीं हुई। लेकिन किसान को अपनी गरीबी की परवाह नहीं थी बल्कि उसे भगवान गणेश की कृपा न मिलने के कारण की चिंता थी। दिन बीत गए, प्रभु के प्रति उनकी प्रार्थना और प्रेम कम नहीं हुआ।

एक दिन रघुदेव प्रसाद और फूल चढ़ाकर पूजा कर रहे थे। उन्होंने देखा कि भगवान गणेश की मूर्ति के सामने अगरबत्ती जल रही थी और वे कल्पना करने लगे की कही अगरबत्ती से निकलने वाला का धुए से भगवान गणेश को स्वतंत्र रूप से सांस लेने में परेशानी न हो। इसलिए उन्होंने अगरबत्ती को थोड़ा अलग रख दिया। उस समय, भगवान गणेश किसान के सामने प्रकट हुए और उसे उसके कार्य के लिए आशीर्वाद दिया क्योंकि उसने मनुष्य के रूप में सोचकर भगवान की पूजा की थी, और किसान भगवान के दर्शन और आशीर्वाद पाकर बहुत खुश हुआ। उनकी गरीबी दूर हो गई और वे स्वास्थ्य और धन के साथ खुशी से रहने लगे।

शिक्षा : भगवान की भक्ति सच्चे मन से करनी चाहिए केवल दिखावे के लिए नहीं।

रोशन कुमार महतो
सहायक श्रेणी.III(राजभाषा)
मंडल कार्यालय, तूतीकोरिन

जहां चाह वहीं राह

खोजना होगा तो खोज ही लूंगा,
चाहे कितनी परतों में छिपा हो,
कोई मेरा, या सबका वह।
चलना होगा तो चल ही लूंगा,
चाहे कितने ही पत्थर वजह,
बनें मेरे रक्त के बहने की।
देखना होगा तो देख ही लूंगा,
चाहे प्रकाश विलीन हो जाए कहीं,
और तम का ही हो क्षितिज।
जानना होगा तो जान ही लूंगा,
चाहे दोहराव करना पड़े जीवन का।
और मिलना होगा, तो ये भी होगा,
चाहें मिलें किसी दूसरे ब्रह्मांड में।

कन्नन पी
सहायक श्रेणी.III(डिपो)
मंडल कार्यालय, कोयम्बत्तूर

भ्रष्टाचार

भ्रष्ट है या भ्रष्टाचार है,
महंगाई की मार है।
बिकता हर समान है,
टिकाऊ कम ज्यादा दाम है।
भ्रष्ट है या भ्रष्टाचार है,
महंगाई से लड़ता इंसान है।
मिलता नया समान है,
टिकाऊ कम ज्यादा दाम है।
भ्रष्ट है या भ्रष्टाचार है,
गरीबों की हार है।
अमीरों का संसार है,
भ्रष्टाचारियों की भरमार है।
भ्रष्ट हैं या भ्रष्टाचार है,
कॉपरिट का संसार है।
शेयर मार्केट का बाजार है
गिरता उठता रोज़गार है।

पंकज सिंह
सहायक श्रेणी.III(राजभाषा)
मंडल कार्यालय, कडलूर

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस(एआई) एक परिवर्तनकारी शक्ति के रूप में उभरा है, जो हमारे रहने, काम करने और दुनिया के साथ बातचीत करने के तरीके को नया आकार दे रहा है। मशीनों द्वारा मानव बुद्धिके अनुकरण पर आधारित इस अत्याधुनिक तकनीक ने हाल के वर्षों में उल्लेखनीय प्रगति की है, जिससे विभिन्न क्षेत्रों में उत्साह और चिंताएं पैदा हो रही हैं। एआई के उदय के पीछे प्राथमिक चालकों में से एक इसकी मानवीय क्षमता से परे गति पर बड़ी मात्रा में डेटा को संसाधित करने और विश्लेषण करने की क्षमता है। इस क्षमता ने स्वास्थ्य सेवा, वित्त और विनिर्माण जैसे उद्योगों में क्रांति ला दी है। स्वास्थ्य–देख भाल में, एआई एप्लिकेशन त्वरित और अधिक सटीक निदान की सुविधा प्रदान करते हैं, चिकित्सा पेशेवरों को समय पर और व्यक्तिगत उपचार योजनाएं प्रदान करने में सहायता करते हैं। वित्तीय संस्थान धोखाधड़ी का पता लगाने, जोखिम मूल्यांकन और निवेशरण नीतियों, दक्षता बढ़ाने और मानवीय त्रुटि को कम करने के लिए एआई एल्गोरिदम का लाभ उठाते हैं। इसके अलावा, विनिर्माण में, एआई–संचालित रोबोटिक्स उत्पादन प्रक्रियाओं को सुव्यवस्थित करते हैं, परिशुद्ध ता में सुधार करते हैं और लागत कम करते हैं। एआई के दायरे में मशीन लर्निंग, प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण और कंप्यूटर विज़न सहित विभिन्न उपक्षेत्र शामिल हैं। मशीन लर्निंग, एआई का एक उप–समूह, सिस्टम को स्पष्ट प्रोग्रामिंग केबिना अनुभव से सीखने और सुधार करने में सक्षम बनाता है। इससे उन्नत भविष्य कहने वाला मॉडल का विकास हुआ है, जैसे ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म में उपयोगकर्ता की प्राथमिकताओं का अनुमान लगाने वाली अनुशंसा प्रणालियाँ। प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण मशीनों को मानव भाषा को समझने और व्याख्या करने की अनुमति देता है, जिससे आभासी सहायकों और चौटबॉट्स को जन्म मिलता है जो उपयोगकर्ता के अनुभवों को बढ़ाते हैं और संचार को सुव्यवस्थित करते हैं। इसके अतिरिक्त, कंप्यूटर विज़न मशीनों को दृश्य डेटा के आधार पर व्याख्या करने और निर्णय लेने का अधिकार देता है, जिससे चेहरे की पहचान, स्वायत्त वाहनों और संवर्धित वास्तविकता में प्रगति को बढ़ावा मिलता है। सकारात्मक प्रभाव की अपार संभावनाओं के बावजूद, एआई की तीव्र प्रगति नैतिक चिंताओं और चुनौतियों को जन्म देती है। नियुक्ति या आपराधिक न्याय जैसी निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में एआई की तैनाती ने पूर्वाग्रह और निष्पक्षता के बारे में बहस छेड़ दी है। यदि सावधानीपूर्वक निगरानी और समायोजन नहीं किया गया तो ऐतिहासिक डेटा पर प्रशिक्षित एआई सिस्टम मौजूदा असमानताओं को कायम रख सकते हैं। गोपनीयता संबंधी चिंताएँ भी बड़ी हैं, विशेष कर निगरानी और डेटा विश्लेषण में एआई के बढ़ते उपयोग के साथ। जिम्मेदार एआई विकास सुनिश्चित करने के लिए तकनीकी प्रगति और नैतिक विचारों के बीच संतुलन बनाना जरूरी है। एआई चर्चा का एक अन्य पहलू रोजगार पर संभावित प्रभाव के इर्द–गिर्द घूमता है। जैसे–जैसे एआई और ऑटोमेशन अधिक प्रचलित हो तेजा रहे हैं, नौकरी के विस्थापन की आशंका बनी हुई है।

जबकि एआई कुछ नियमित कार्यों को समाप्त कर सकता है, यह नवाचार और रोजगार सृजन के लिए नए रास्ते भी खोलता है। कार्य बल को फिर से कुशल बनाना और आजीवन सीखने की संस्कृति को बढ़ावा देना, उभरते नौकरी परिदृश्य को आगे बढ़ाने के महत्वपूर्ण घटक हैं। एआई के भविष्य के प्रक्षेप पथ को आकार देने के लिए शिक्षाजगत, उद्योग और नीति निर्माताओं के सहयोगात्मक प्रयास आवश्यक हैं। जोखिमों को कम करते हुए एआई की पूरी क्षमता का दोहन करने के लिए नैतिक दिशा निर्देश स्थापित करना, पारदर्शिता को बढ़ावा देना और अंतः विषय अनुसंधान को बढ़ावा देना महत्वपूर्ण कदम हैं। वैश्विक चुनौतियों से निपटने के लिए अंतर्राष्ट्रीय सहयोग भी महत्वपूर्ण है, जैसे एआई विकास के लिए मानक स्थापित करना और सर्वोत्तम प्रथाओं को साझा करना।

निष्कर्षतः कृत्रिम बुद्धिमत्ता तकनीकी प्रगति में सबसे आगे है, जो अभूतपूर्वअवसर और चुनौतियाँ पेश करती है। इसका प्रभाव विभिन्न क्षेत्रों तक फैला है, जिससे समस्याओं से निपटने और जानकारी के साथ जुड़ने के हमारे तरीके में क्रांतिकारी बदलाव आया है। हालाँकि, नैतिक विचारों और सामाजिक निहितार्थों के लिए एक विचारशील और सहयोगात्मक दृष्टिकोण की आवश्यकता है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके किए आई समग्र रूप से मानवता को लाभान्वित करें। जैसे–जैसे हम इस परिवर्तनकारी युग में आगे बढ़ रहे हैं, नवाचार और जिम्मेदारी के बीच संतुलन बनाना जरूरी है, एआई परिदृश्य को बढ़ावा देना जो मानव क्षमताओं को बढ़ाता है और हमारे सामूहिक भविष्य को समृद्ध करता है।

एस रक्षीत्रा
सुपुत्री पी ए सुबाथिनम
सहायक श्रेणी.II(तकनकी)
मंडल कार्यालय, तंजाऊर

चिडिया

मेरे पास एक चिडिया है।
वह बहुत ही बढ़िया है।
मेरे मामा ने मुझे दिया,
मैंने खुशी से उसे लिया।

मेरी चिडिया अच्छी चिडिया।
सबको भाती वैसी गुडिया।
दिन भर गाना गाता रहता।
दिल का भार घटता घटता।

बच्चे चलते खेल खेल में।
चिडिया चलती फूल फूल में।
बच्चों की बोली छोटी छोटी।
चिडिया की बोली मीटी मीटी।

एस नक्षत्रा
सुपुत्री पी ए सुबाथिनम
सहायक श्रेणी.II(तकनकी)
मंडल कार्यालय, तंजाऊर

मेरी पतंग

यह पतंग मेरी मतवाली
आसमान तक उड़ने वाली।
ऊपर नीचे आती जाती,
बार–बार उड चक्कर खाती।
तेज हवा से यह डठलाती,
सब बच्चों का मन ललचाती।

नक्षत्रा की पतंग यह आई,
बच्चों ने भी दौड लगाई।
मैंने कुछ–कुछ डोर बढ़ाई,
अब उनमें छिड डोर गई लडाई!
कट पतंग धरती पर आई,
हरा न मानो नक्षत्रा!

यह पतंग मेरी मनवाली।
टासमान तक उडने वाली।

आनन्द वि
सहायक श्रेणी.III(लेखा)
मंडल कार्यालय तूतीकोरिन

पर्यावरण

पर्यावरण दो शब्दों से मिलकर बना है : परि + आवरण। परि का अर्थ है चारों ओर, आवरण का अर्थ है घेरे हुए । इस प्रकार ऐसा आवरण जो हमें चारों ओर से घेरे हुए है, पर्यावरण कहलाता है। पर्यावरण को अंग्रेजी में एनवायरनमेंट कहते हैं। एनवायरनमेंट शब्द फ्रेंच भाषा के "environner" शब्द से लिया गया है। जिसका अर्थ है घिरा हुआ या घेरा होना।

पर्यावरण में पाए जाने वाले कारकों के आधार पर हम इसे दो भागों में बांट सकते हैं :

1. प्राकृतिक पर्यावरण, 2. मानव निर्मित पर्यावरण

प्राकृतिक पर्यावरण के अंतर्गत वे सभी संसाधन आते हैं, जो हमें प्रकृति से प्राप्त है या जिन के निर्माण में मनुष्य की कोई सहभागिता नहीं है। जो अनादि काल से इस धरती पर अस्तित्व में है। प्राकृतिक पर्यावरण के अंतर्गत नदी, पर्वत, जंगल, गुफा, मरुस्थल, समुद्र आदि आते हैं।

हमें प्रकृति से भरपूर मात्रा में खनिज, पेट्रोलियम, लकड़ियां, फल, फूल, औषधियां प्राप्त होती है, जिनका उपयोग अपने दैनिक जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए करते हैं। सबसे महत्वपूर्ण है – प्राणदायी ऑक्सीजन,जो हमें पेड़ों से प्राप्त होती है। इन सब के बिना जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती।

मानव निर्मित पर्यावरण में तालाब, कुंए, खेत ,बगीचे, घर–आवास, इमारतें, उद्योग आदि आते हैं। यह सब मिलकर मनुष्य जीवन का आधार विकसित करते हैं और एक तरह से मानव जीवन की प्रगति का सूचक है कि – किस तरह झोपड़ियों में रहने वाला मानव, आज गगनचुंबी इमारतों का निर्माण कर रहा है।

जैसे सभ्यताओं का विकास हुआ, मनुष्य ने नए–नए आविष्कार किए और अपने जीवन को सुविधाजनक बनाने हेतु, वह प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक उपयोग करने लगा, और आज मानव निर्मित पर्यावरण, धरती के कोने–कोने पर विस्तृत होता जा रहा है।

पानी के अंदर हो या आसमान में, मनुष्य सब जगह अपना साम्राज्य स्थापित करने में लगा है। अब तो हमने दूसरे ग्रहों पर भी जीवन की तलाश करना शुरू कर दिया है।

प्राचीन काल से ही वृक्षों के प्रति भारतीय समाज का अनुराग सांस्कृतिक परंपरा के रूप में विकसित हुआ हैं। चाहे कोई भी धार्मिक त्यौहार हो या शुभ अवसर। हिंदू धर्म में पेड़ों को शुभ मानकर पूजा जाता है। पौराणिक कथाओं में तुलसी, पीपल, वट जैसे वृक्षों का विशेष महत्व बताया गया है। हमारे ऋषि मुनि आदिमानव प्रकृति के साथ तालमेल मिलाकर जीवन यापन करते थे। गुफाओं में रहते थे। कंदमूल फल खाते थे और प्रकृति का सम्मान करते थे। एक तरह से उन्होंने पर्यावरण के साथ सामंजस्य बिठाना सीख लिया था और आज भी मानव का अस्तित्व वनस्पति और जीव–जंतुओं के ऊपर निर्भर है। पर्यावरण हम सबका पालनहार और जीवनाधार है। किंतु आश्चर्य होता है कि मनुष्य धरती के स्त्रोतों का कितना अंधाधुंध दोहन करता जा रहा है।

जिससे सारा प्रकृति तंत्र गड़बड़ा गया है। अब वह दिन दूर नहीं लगता, जब धरती पर हजारों शताब्दियों पुराना हिम युग लौट आएगा अथवा ध्रुवों पर जमी बर्फ की मोटी परत पिघल जाने से समुद्र की प्रलयकारी लहरें नगरो, वन ,पर्वतो, और जंतुओं को निगल जाएंगी।

हम सभी जानते हैं कि धरती पर जीवन, प्रकृति संतुलन से संभव हो सका है। धरती वनस्पतियों से ढक ना जाए, इसलिए घास खाने वाले जानवर पर्याप्त संख्या में थे। इन घास खाने वाले जानवरों की संख्या को संतुलित, सीमित रखने के लिए हिंसक जंतु भी थे। इन तीनों का अनुपात, संतुलित और नियंत्रित था।

किंतु समय के साथ पर्यावरण का संतुलन तेजी से बिगड़ता जा रहा है। मनुष्य, प्रकृति द्वारा प्रदत्त संसाधनों का अविवेकपूर्ण ढंग से दुरुपयोग कर रहा है, जिससे सारा प्रकृति तंत्र गड़बड़ा गया है। इसी असंतुलन से भूमि, वायु, जल और ध्वनि के प्रदूषण उत्पन्न हो रहे हैं। पर्यावरण प्रदूषण से फेफड़ों के रोग, हृदय, पेट की बीमारियां, दृष्टि और श्रवण क्षतियां, मानसिक तनाव और तनाव संबंधी रोग पैदा हो रहे हैं।

आधुनिक युग में वैज्ञानिक आविष्कारों और उद्योग धंधों के विकास, फैलाव के साथ–साथ जनसंख्या का भयावाह विस्फोट हुआ है। इन सभी कारकों ने पर्यावरण असंतुलन उत्पन्न किया है।

प्रदूषण रोकने के उपाय

उद्योगों को आवासीय क्षेत्रों से दूर ले जाकर बसाना चाहिए।

पुराने मशीनों का प्रतिस्थापन करना चाहिए

हार्न का उपयोग न्यूनतम करना चाहिए।

रेल पटरी में सुधार।

नई पीढ़ी को ध्वनि प्रदूषण के प्रतिकूल प्रभाव के बारे में जागरूक करना ।

मानव क्रियाकलापों के कारण पर्यावरण में तेजी से बदलाव आ रहा है। इस बदलाव के अनेक रूप है । जैसे ओजोन क्षरण, वनों की कटाई, अम्ल वर्षा, वायुमंडल में ग्रीन हाउस गैसों की अधिकता, फलस्वरुप भूमंडलीय तापमान में वृद्धि।

घटते प्राकृतिक संसाधनों की समस्या से निपटने के लिए समाज के सभी स्तर पर पर्यावरण संबंधी जागरूकता अनिवार्य है । वैज्ञानिकों ,राजनीतिज्ञों, नियोजकों तथा लोगों को सम्मिलित रूप से पर्यावरण की स्थिति सुधारने के लिए काम करना होगा । जिसके लिए संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग आवश्यक है।

अधूरा

पंकज सिंह
सहायक श्रेणी.III (राजभाषा)
मंडल कार्यालय, कडलूर

एक हिस्सा तुमने तोड़ा
एक मेरे विश्वास ने
जो हम थे पूरे कभी
आज अधूरे हैं।

कुछ दर्द तूने दिए
कुछ मेरे ऐत बारने
जो सपने मुकम्मल थे कभी
आज अधूरे हैं।

कुछ मार्ग तू भटकी
कुछ मेरी उम्मीदें टूटी
जितने खूबसूरत साथ थे अपने
आज अधूरे हैं।

कुछ दुआएं मेरी कमजोर हुई
कुछ चाहते तूने बदली
तेरे इश्क की चाहतो में हम
आज अधूरे हैं।

एक मुकम्मल इश्क की तलाश में
कई मेरे सपने टूटे,
जो हृदय कल पुष्पित था
आज अधूरा है।

एस.मिन्हाज नूरिया,
सहायक श्रेणी.II(तकनीकी)
मंडल कार्यालय, चेन्नई

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस

उपर्युक्त पंक्तियाँ पूर्ण रूप से एक नारी के संघर्ष की गाथा को प्रकट करती हैं। इसी नारी का हजारों वर्षों से शोषण होता आया है, कभी आडंबरों के माध्यम से, तो कभी परिवार के सम्मान के लिए, इसी नारी को सम्मान देने तथा उसकी उपलब्धियों का गुणगान करने और उनके समर्पण को मुल्य प्रदान करने के लिए प्रत्येक वर्ष 8 मार्च को अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस (International Women's Day) मनाया जाता है। अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस (international women's day) की शुरुआतआज से लगभग एक सदीपूर्व एक समाजवादी आंदोलन के माध्यम से हुईथीजोकि एक श्रम आंदोलन से उपजाथा। इसके बाद संयुक्त राष्ट्र ने अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस को वार्षिक रूप से मनाने की मान्यता दी थी। अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस की शुरुआत साल 1908 में हुई थी, जब न्यूयॉर्क शहर की सड़कों पर हजारों महिलाएं घंटों काम के लिए बेहतर वेतन और सम्मान तथा समानता के अधिकार को प्राप्त करने के लिए उतरी थी। अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मनाने का प्रस्ताव रखा, उन्होंने साल 1910 में यह प्रस्ताव रखा था। पहला अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस साल 1911 में ऑस्ट्रिया, डेनमार्क, जर्मनी और स्विट्ज़रलैंड में मनाया गया था। यह अंतरराष्ट्रीय महिलादिवस के इतिहास से संबंधित कुछ बातें थी, लेकिन अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस को औपचारिक मान्यता वर्ष 1996 में प्रदान की गई थी। संयुक्त राष्ट्र द्वारा इसे 'अतीत का जश्न, भविष्य की योजना थीम के साथ शुरू किया गया था आज के परिप्रेक्ष्य में अगर हम विचार करें, तो हम पात हैं कि आज की तारीख में महिलाएं पुरुषों से बहुत आगे निकल गई हैं। महिलाओं को जब–जब अवसर दिया गया, तब–तब उन्होंने पूरे विश्व को बता दिया कि वह पुरुष के बराबर ही नहीं, बल्कि कई मौकों पर वे उनसे कई गुना बेहतर साबित हुई हैं। आज विश्व पटल पर महिलाएं नए–नए कीर्तिमान स्थापित कर रही हैं। अब वह समय नहीं रहा जब महिलाएं घर की चार–दिवारी में बंद की जाती थी। अब महिलाए हर क्षेत्र में अपनी प्रतिभा का बेहतर प्रदर्शन कर रही हैं।

भले ही आज भारत में महिलाओं के उत्थान के लिए भरसक प्रयास किए जा रहे हैं, परंतु इसकी शुरुआत राजा राम मोहन राय ने की थी। उन्हें भारतीय पुनर्जागरण का अग्रदूत भी माना जाता है। उन्होंने भारतीय समाज से सती प्रथा जैसी कुप्रथाओं को समाप्त करने का प्रयास किया। वर्त्तमान समय में भारत सरकार महिलाओं की स्थिति को सुधारने का प्रयास कर रही है, साल 2001 में भारत सरकार ने महिला सशक्तिकरण हेतु अपनी राष्ट्रीय नीति का गठन किया। महिला सशक्तिकरण नीति को मंजूरी केंद्र सरकार द्वारा 21 मार्च 2001 को दी गई थी। महिला सशक्तिकरण नीति के मुख्य बिंदु इस प्रकार है – महिला सशक्तिकरण के लिए महिलाआ को देश में राजनितिक, सामाजिक और आर्थिक क्षेत्र में पुरुषों के समान अधिकार प्रदानकरना। महिला सशक्तिकरण के लिए महिलाओं के प्रति होने वाले हर तरह के शोषण और भेदभाव को समाप्त करना। महिला सशक्तिकरण के लिए महिलाओं के लिए ऐसा वातावरण तैयार करना जिसमें वह खुद को सुरक्षित महसूस कर सकें। महिला सशक्तिकरण के लिए समाज में महिलाओं के प्रति व्यवहार में बदलाव लाने के लिए राजनितिक, सामाजिक, और आर्थिक क्षेत्र में बराबर हिस्सेदारी प्रदान करना।

महिला सशक्तिकरण के लिए महिलाओं और बालिकाओं के प्रति होने वाले अपराध को समाप्त करना।

महिला सशक्तिकरण के लिए कन्या भूर्ण हत्या को समाप्त करना।

महिला सशक्तिकरण के लिए देश में महिला और पुरुष अनुपात को समान अवस्था में लाना।

महिला सशक्तिकरण के लिए महिलाओं को शिक्षा प्रदान करना तथा उन्हें आरक्षण प्रदान करना।

अरुण कुमार आर
सहायक श्रेणी.III(डिपो)
मंडल कार्यालय, तंजाऊर

सहभागिता

भुमिका : कोविड–19 महामारी से उत्पन्न अभूतपूर्व चुनौती के सामने, भारत ने सार्वजनिक स्वास्थ्य संकट के प्रबंधन और अपनी अर्थव्यवस्था को स्थिर कर दोनों में उल्लेखनीय लचीलापन प्रदर्शित किया। यह संक्षिप्त निबंध उन प्रमुख रणनीतियों और उपायों की पड़ताल करता है जिन्होंने दोनों मोर्चों पर भारत को पुनः खड़े होने में योगदान दिया।

सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रतिक्रियाः क) कड़े लॉकडाइन उपायःभारत ने विश्व स्तर पर सबसे सख्त लॉकडाउन में से एक को लागू किया, जिससे वायरस के प्रारंभिक प्रसार पर अंकुश लगा।

ख) टीकाकरण अभियानः सामूहिक प्रतिरक्षा हासिल करने के लिए आबादी के एक बड़े हिस्से को लक्ष्य करते हुए एक मजबूत टीकाकरण अभियान शुरू किया गया।

ग) स्वास्थ्य देखभाल बुनियादी ढांचे में वृद्धिः स्वास्थ्य देखभाल बुनियादी ढांचे में निवेश किया गया, जिसमें अस्थायी कोविड सुविधाओं की स्थापना और आईसीयू क्षमता में वृद्धि शामिल है।

आर्थिक पुनरुद्धार रणनीतियाँः क) राजकोषीय प्रोत्साहन पैकेजः सरकार ने महामारी से प्रेरित आर्थिक मंदी से प्रभावित व्यवसायों और व्यक्तियों का समर्थन करने के लिए व्यापक राजकोषीय प्रोत्साहन पैकेज शुरू किए।

ख) डिजिटल परिवर्तनः डिजिटल प्रौद्योगिकियों को अपनाने से आर्थिक गतिविधियों में तेजी आई, जिससे लॉकडाउन के बावजूद विभिन्न क्षेत्रों में निरंतरता सुनिश्चित हुई।

ग)आत्मनिर्भर भारत (आत्मनिर्भर भारत): 'आत्मनिर्भर' पहल का उद्देश्य घरेलू उत्पादन को बढ़ावा देना और आयात पर निर्भरता को कम करना, आर्थिक आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देना है।

सामाजिक कल्याण उपायः क)प्रत्यक्ष नकद हस्तांतरणः सरकार ने तत्काल राहत प्रदान करते हुए समाज के कमजोर वर्गों को सीधे नकद हस्तांतरण शुरू किया।

ख) रोजगार गारंटी योजनाएँः रोजगार के अवसर पैदा करने और बेरोजगारी कम करने के लिए मनरेगा जैसे कार्यक्रमों का विस्तार किया गया।

ग) खाद्य सुरक्षा पहलः वितरण कार्यक्रमों के माध्यम से हाशिए पर मौजूद आबादी के लिए खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए निरंतर प्रयास किए गए।

अंतरराष्ट्रीय सहयोगः क)वैश्विक सहयोगः भारत सक्रिय रूप से वैक्सीन विकास और संसाधन–साझाकरण दोनों में अंतर्राष्ट्रीय सहयोग में लगा हुआ है, जिससे वैश्विक एकजुटता की भावना को बढ़ावा मिल रहा है।

ख) आर्थिक साझेदारीः प्रमुख साझेदारों के साथ आर्थिक संबंधों को मजबूत करने से व्यापार और निवेश को बढ़ावा मिला, जिससे भारत की आर्थिक सुधार में योगदान मिला।

निष्कर्ष : कोविड–19 महामारी और आर्थिक मंदी की दोहरी चुनौतियों से भारत की सफल वसुली का श्रेय सक्रिय सार्वजनिक स्वास्थ्य उपायों, रणनीतिक आर्थिक नीतियों, सामाजिक कल्याण पहल और वैश्विक मंच पर सहयोगात्मक प्रयासों के संयोजन को दिया जा सकता है। जैसे–जैसे राष्ट्र महामारी के बाद के परिदृश्य में आगे बढ़ रहा है, इस अनुभव से सीखे गए सबक संभवतः भविष्य की नीतियों और तैयारियों की रणनीतियों को आकार देंगे।

शाश्वत राय
सहायक श्रेणी.I(डिपो)
मंडल कार्यालय, वेल्लूर

कृषि पर्यटन : पर्यटन का नया ठिकाना, भारत का अनोखा खजाना

शहरों की चकाचौंध के बीच कहीं गुम हो चुका है प्रकृति का सौंदर्य, खेती–किसानी की खुशबू और गांवों का अनोखा आकर्षण। ऐसे में पर्यटन की एक नई शैली उभर रही है – कृषि पर्यटन, जो शहरी तनाव से मुक्त कर हमें वापस जड़ों से जोड़ रही है। भारत, जीवंत रंगों और प्राचीन परंपराओं की भूमि, पर्यटन की एक नई लहर देख रही है – जो इसके ग्रामीण संस्कृति के दिल में उतरती है। हलचल भरी सड़कों और ऐतिहासिक स्मारकों को भूल जाओय कृषि पर्यटन, हरे–भरे खेतों, मिट्टी की सुगंध और प्रामाणिक ग्रामीण जीवन के वादे के साथ, आधुनिक यात्रियों को लुभा रहा है।

आंकड़े बयां करते हैं कहानी :–

2019 में वैश्विक स्तर पर कृषि पर्यटन बाजार का मूल्य +42.46 बिलियन था और 2027 तक +62.98 बिलियन तक पहुंचने का अनुमान है, जो 13.4 की गति से बढ़ रहा है।

भारतीय पर्यटन मंत्रालय के अनुसार, कृषि पर्यटन वर्तमान में भारतीय पर्यटन उद्योग का केवल 1% हिस्सा है, लेकिन 2026 तक इसके 10% तक पहुंचने की उम्मीद है।

एक रिपोर्ट के मुताबिक, 2020 में ही भारत में लगभग 20 लाख पर्यटकों ने कृषि पर्यटन गतिविधियों में भाग लिया।

विविधता है भारत का सौंदर्य : हिमालय की ऊंचाइयों में: सेब के बागान,पंजाब के सुनहरी धान के खेतों में फसल कटाई का नजारा और पारंपरिक पंजाबी संस्कृति, केरल में हरे–भरे धान के खेतों, दार्जिलिंग में विशाल चाय के बागानों और महाराष्ट्र में धूप में खिले फलों के बगीचों के बीच, अब देश भर में 500 से अधिक फार्महाउस उग आए हैं। लोकप्रियता में यह वृद्धि अनुभवात्मक यात्रा के प्रति बढ़ती भूख के कारण उत्पन्न हुई है। कंक्रीट के जंगल से राहत पाने की चाहत रखने वाले शहरी निवासी, ग्रामीण जीवन की सादगी में सांत्वना पाते हैं। कृषि–पर्यटन पारंपरिक प्रथाओं में विसर्जन प्रदान करता है: गायों को दूध देना, फसलों की कटाई करना, या पीढ़ियों पुराने किसानों से सदियों पुराने व्यंजनों को सीखना। खुले आसमान के नीचे चखे गए घरेलू भोजन का स्वाद किसी भी पांच सितारा पाक अनुभव से बढ़कर है।

आर्थिक और सामाजिक लाभ का संगम :–

कृषि पर्यटन से ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के अवसर पैदा होते हैं और पलायन रुकता है।

स्थानीय उत्पादों जैसे शहद, मसाले और हस्तशिल्प को बाजार मिलता है, जिससे किसानों की आय बढ़ती है। पर्यटकों को ग्रामीण संस्कृति और परंपरा का अनुभव होने से सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण होता है।

खेतों में काम करने, फसल काटने और स्थानीय व्यंजनों का आनंद लेने से पर्यटकों को प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता बढ़ती है।

भविष्य की राह : चुनौतियां और उम्मीदें :–

बुनियादी सुविधाओं का विकास, जैसे स्वच्छता, आवास और परिवहन, को मजबूत बनाना जरूरी है।

स्थानीय समुदाय को प्रशिक्षित कर पर्यटन सेवाओं का प्रबंधन अच्छा करना चाहिए। आकर्षक पर्यटन पैकेज बनाकर और प्रचार अभियान चलाकर कृषि पर्यटन को लोकप्रिय बनाने की जरूरत है।

श्री पांडुरंग तवरे को भारत में कृषि पर्यटन अवधारणा का जनक माना जाता है। उन्हें ,भारत के उपराष्ट्रपति के हाथों से राष्ट्रीय पर्यटन पुरस्कार, 2010 प्राप्त हुआ और वह डब्ल्यूटीटीसी लंदन द्वारा गठित ग्लोबल टूरिज्म फॉर टुमॉरो अवार्ड 2011 में फाइनलिस्ट थे।

16 मई 2005, कृषि पर्यटन विकास निगम द्वारा कृषि पर्यटन के पायलट प्रोजेक्ट को लागू करने और शुरू करने का एक विनम्र प्रयास श्री पांडुरंग तवरे के नेतृत्व में 2005 में महाराष्ट्र में बारामती के पास मालेगांव में किया गया था, जहां कृषि विकास ट्रस्ट के फार्म पर कृषि पर्यटन का प्रदर्शन किया गया था।

उत्तर प्रदेश पर्यटन विभाग ने वर्ष 2022 में ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए चरणबद्ध अभियान शुरू किया है। कुल 18 जिले चिन्हित किए गए हैं, जहां ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा देने का प्रयास किया जाएगा। इस अभियान का मुख्य उद्देश्य गांवों की सांस्कृतिक विरासत को बढ़ावा देना होगा। इनमें से बहुत से गांवों की समृद्ध ऐतिहासिक पृष्ठभूमि भी है।

हालांकि चुनौतियां हैं, लेकिन कृषि पर्यटन के भविष्य को लेकर उम्मीदें भी कम नहीं हैं। सरकार की पहल और सभी के सहयोग से भारत को कृषि पर्यटन का वैश्विक गंतव्य बनाने का सपना पूरा हो सकता है। आइए, हम सब मिलकर भारत की समृद्ध कृषि संस्कृति को पर्यटकों के सामने लाएं और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत करें। कृषि–पर्यटन अनुभवों में पर्यावरण–अनुकूल प्रथाएँ और जैविक खेती तेजी से लोकप्रिय हो रही हैं।कई फार्मस्टे ट्रैकिंग, बर्डवॉचिंग और साइक्लिंग जैसी साहसिक गतिविधियों की पेशकश करते हैं। कृषि–पर्यटन में ग्रामीण भारत में 1 मिलियन से अधिक नौकरियाँ पैदा करने की क्षमता है। कृषि पर्यटन को बढ़ावा देकर, भारत न केवल एक अद्वितीय और टिकाऊ पर्यटन अनुभव बना सकता है, बल्कि ग्रामीण समुदायों को भी सशक्त बना सकता है और अपनी समृद्ध कृषि विरासत का जश्न मना सकता है।

सी प्रविण ब्रगेट
सहायक श्रेणी.III(सामान्य)
मंडल कार्यालय, कोयम्बत्तूर

वरदान

हे। माँ मुझे वरदान दे,
भानू जैसा प्रकाश दे,
वायू जैसा वेग दे,
तप त्याग और प्रकाश दे।
हे। माँ मुझे वरदान दे,
नीर सा निर्मल ध्यान दे,
अनल के समान ताप दे,
अहंकार को मात दे।
हे! माँ मुझे वरदान दे,
विवेक की पहचान दे,
तिमिर का संहार दे,
ज्योति सा जलू ऐसा आग दे।
हे! माँ मुझे वरदान दे,
अस्तित्व की पहचान दे,
दरिद्रता का संहार दे,
ज्ञान का प्रकाश दे।
हे माँ मुझे वरदान दे।

अनिल कुमार
सहायक श्रेणी.II(सामान्य)
मंडल कार्यालय, तंजाऊर

ऐ ज़िंदगी

ऐ ज़िंदगी कभी तो इश्क़ कर ले,
कम ज़रा ये रश्क कर ले।
शिकायतें हैं जो,
कभी तो बयां कर कर दे।
हारी हुई शामों में,
साथ एक पल का तो दे–दे
कभी तो गले से लगा ले।
ऐ ज़िंदगी कभी तो इश्क़ कर ले,
कम ज़रा ये रश्क कर ले
उलझने मन की,
कभी तो सुन ले।
कब तक अनजान रहेगी तू,
कभी ता अपना पतला बता दे,
खिजा से कभी तो बहार लादे,
ऐ ज़िंदगी कभी तो इश्क़ कर ले,
ऐ ज़िंदगी कभी तो इश्क़ कर ले।

पार्शवी शर्मा

सुमन सिंह
सहायक श्रेणी.II(राजभाषा)
मंडल कार्यालय, चेन्नई

भ्रष्टाचार

आज देश और दुनिया में हर जगह, हर क्षेत्र में भ्रष्टाचार फैला हुआ है। भ्रष्टाचार देश के विकास में मुख्य बाधाओं में से एक है। भ्रष्टाचार समाज और देश के लिए एक बड़ी समस्या है, जो न केवल लोगों के विश्वास और प्रगति को प्रभावित करता है, बल्कि संवैधानिक और अर्थव्यवस्था के क्षेत्र में भी नुकसान पहुंचाता है।

आज देश और दुनिया के हर क्षेत्र में भ्रष्टाचार चरम पर पहुंच गया है। हमारे देश में भी भ्रष्टाचार ने अपनी जड़ें गहरी जमा रखी हैं, आप जहां भी देखें, अधिकारी और नेता भ्रष्टता से भरे पड़े हैं।

देश में भ्रष्टाचार हर विभाग में और हर जगह भरा पड़ा है। दुराचारी अर्थात भ्रष्ट और बिगड़ैल व्यक्तित्व भष्ट की श्रेणी में आते हैं।

यदि कोई व्यक्ति अपने अधिकारों का दुरुपयोग करता है और अपने व्यक्तिगत लाभ, आत्म–पूर्ति के लिए गलत तरीके से काम करता है, तो उस भ्रष्ट कहा जाता है।

भारत भ्रष्टाचार के मामले में आज दुनिया में 85वें स्थान पर है।

भ्रष्टाचार के मुख्य कुछ कारण– भ्रष्टाचार हर विकासशील देश की सामान्य समस्या है, यहां भ्रष्टाचार का मुख्य कारण देश का लचीला कानून है। पैसे के दम पर अधिकांश भ्रष्टाचारी कानूनी प्रक्रिया से सम्मान के साथ बरी हो जाते हैं, जिससे अपराधी को सजा का डर नहीं रहता।

. लोभ और असन्तोष ऐसे विकार हैं जो शिक्षित और बुद्धिमान व्यक्ति को भी बहुत ही तुच्छ कार्य करने के लिए विवश कर देते हैं।

. कई बार आर्थिक, सामाजिक या सम्मान, पद–प्रतिष्ठा की असमानता के कारण व्यक्ति स्वयं को भ्रष्ट बना लेता है।

भ्रष्टाचार का विरोध करना एक चुनौतीपूर्ण कार्य है जो समाज के सभी क्षेत्रों से समन्वयित प्रयासों की आवश्यकता होती है। इसमें कानून के शासन को मजबूत करना, पारदर्शिता और जवाबदेही को बढ़ाना, कानून निष्पक्ष और प्रभावी कार्रवाई की सुनिश्चितता शामिल है। इसमें नैतिक मूल्यों को बढ़ावा देना और सरकार और समाज में ईमानदारी की एक संस्कृति बनाना भी शामिलहै।

भारत के लिए और सभी देशों के लिए भ्रष्टाचार एक बहुत बड़ी चुनौती है, और जब तक आम आदमी मिलकर इसके खिलाफ खड़े नहीं होते, यह खत्म नहीं होगा। हमें अपने देश को बचाने के लिए देश के अच्छे नागरिक होने का फर्ज निभाना होगा। ऐसे लोगों को सामने लाना होगा जो शासन या प्रशासनिक कार्यालयों में भ्रष्टाचार को बढ़ावा देते हैं। हमें एक अच्छे राष्ट्र निर्माण के लिए भ्रष्टाचार को खत्म करने के लिए प्रयास करने होंगे।

भ्रष्टाचार मिटाओ
देश बचाओ

कट्टबोम्मन के
सहायक श्रेणी.III(सामान्य)
मंडल कार्यालय, तंजाऊर

सुंदर मन, गोरे रंग से भी अच्छा है।

किसी ने बिल्कुल सही कहा है सुंदरता का मतलब सुंदर चेहरा होना नहीं है। यह एक सुंदर चेहरा होने के बारे में है। यह एक सुंदर दिमाग, एक सुंदर दिल और सबसे महत्वपूर्ण रूप से एक सुंदर आत्मा होने के बारे में है। हालाँकि, अभी भी ऐसे कई लोग हैं जिनमें इस नैतिकता की कमी है और वे व्यक्तित्व के बजाय दिखावे के पीछे भागते हैं। भारत में लोगों पर गोरे रंग का इतना जुनून सवार है कि वे सिर्फ सांवले रंग की वजह से लड़की को शादी के लिए ठुकरा देते हैं। जब हम वैवाहिक विज्ञापन पढ़ते हैं तो यह देखकर बहुत दुख होता है कि हर कोई गोरे रंग की दुल्हन चाहता है। नौकरी के विज्ञापनों के लिए हर कोई गोरी त्वचा वाले लोगों की मांग करते हैं। तमाम फेयरनेस क्रीमों की अधिक बिक्री भी गोरे रंग के प्रति लोगों की दीवानगी का संकेत है। यह पूरी तरह से पश्चिमी देशों के लोगों के विपरीत है, जहां वे सांवली त्वचा पाने को लेकर सहज हैं। इसके अलावा, वे सांवली त्वचा पाने के लिए अच्छी रकम भी भुगतान करते हैं।

अब समय आ गया है कि हमें यह समझने की जरूरत है कि हम सभी अलग दिखने का समर्थन कर रहे हैं, भूरी त्वचा की अपनी सुंदरता होती है और यह त्वचा के नीचे पूरी तरह से समा जाती है, हमें अच्छे इंसान बनने पर ध्यान केंद्रित करने की जरूरत है, जो हमें जीवन में कहीं और ले जाएगा। भूलने की बात नहीं, सुंदरता केवल त्वचा तक ही सीमित होती है, यह ऐसी चीज है जो थोड़े समय के लिए ही रहती है, जबकि एक सकारात्मक चरित्र शाश्वत होता है। इसलिए गोरे रंग को तरजीह देने के बजाय आंतरिक सुंदरता पर ध्यान दें, साथ ही हमें अवधारणात्मक अनुभव, आनंद और संतुष्टि प्रदान करें, हमें अच्छे कार्य करने के लिए प्रेरित करें, हमारे समाज का हमारी वास्तविक प्रगति तब होगी जब हम आम जनता के भीतर ऐसी जातिवादी मानसिकता से छुटकारा पा लेंगे।

अदम्य शक्ति

बिमल ए. राज
सहायक श्रेणी.III(तकनीकी)
मंडल कार्यालय, वेल्लूर

हे मानव !
तुम में अदम्य शक्ति है...
उसे जगाकर जीत लिया तुम ने
दुनिया को
पलभर के इस अनोखे जीव..
जीत लिया धरती, गगन, चाँद – तारों को ...
जीत लिया तुम ने अपने सपनों को
जीत लिया मन–मस्तिष्क को
जाग उठा कुंडलिनी सुप्तावस्था से...
बढ़–बढ़ कर ...
खिल उठे सहस्त्र पद्म
आनन्द की अदम्य शक्ति से।।

लोकेश कुमार शाह के आर
प्रबंधक(राजभाषा)
क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नई

भारतीय खाद्य निगम में राजभाषा

भारतीय खाद्य निगम का जन्म एक ऐसे ही विशेष परिस्थिति में हुई। जब देश में भुखमरी की स्थिति आग गई थी। खाद्यान्नों को लेकर लोगों में भदचढ़ मचा हुआ था और यह संस्थान जिस उद्देश्य से गठित की गई उस उद्देश्य को बखूबी संभाला और देश में ऐसी कोई भी स्थिति आगे आने नहीं दिया। इसी के अनुरूप राजभषा के क्षेत्र में भारतीय खाद्य निगम एक मिसाल के रूप में उभरकर सामना आया है। इसके मुख्य कार्यकलापों के साथ राजभाषा कार्यान्वयन में अपना मजबूत पहल के कारण संसदीय राजभाषा समिति द्वारा कई बार प्रशंसा भी प्राप्त हुआ है। निगम में राजभाषा कार्मिकों को संगठित रूप में व्यवस्थित करने हेतु वर्ष 2015 में राजभाषा संवर्ग बनाया गया। जिसमें देश भर के निगम के कार्यालयों में राजभाषा संवर्ग के कार्मिकों की तैनात करने हेतु व्यवस्थित रूप दिया गया। आज राजभाषा संवर्ग एक मजबूत संवर्ग के रूप में निगम के मुख्य कार्यकलापों के साथ आत्मसात करते हुए राजभाषा के गतिविधियों में अव्वल स्थान प्राप्त करने के लिए हमेशा अग्रसर रहा है।

दक्षिणांचल में निगम के कुल 40 कार्यालयों में राजभाषा कार्यान्वयन के दिशा–निर्देश प्रदान करने हेतु आंचलिक कार्यालय(दक्षिण) के नेतृत्व में आगे बढ़ने की राह में है। खासकर, पहली बार राजभाषा संवर्ग के नव. नियुक्त कार्मिकों को राजभाषा संबंधी विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। सीमित मानव संसाधन के बावजूद भी तमिलनाडु क्षेत्र दिन–ब–दिन राजभाषा कार्यान्वयन खास उपलब्धि हासिल करते आगे बढ़ रहा है। वर्ष 2022-23 में नराकास(उपक्रम) चेन्नई द्वारा उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन के लिए छोटे कार्यालयों की श्रेणी में क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नई को द्वितीय पुरस्कार प्रदान किया गया।

क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नई जो नराकास(उपक्रम) चेन्नई के सदस्य–कार्यालय होने के नाते राजभाषा गति. विधियों में सक्रिय भागीदारी करता आ रहा है और इसी तरह अधीनस्थ कार्यालायों में भी नराकास द्वारा आयोजित राजभाषायी गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी किया जाता रहे हैं।

निष्कर्ष के रूप में दक्षिणांचल में हिंदीतर क्षेत्र में राजभाषा हिंदी के लिए विपरीत वातावरण होने के बावजूद भी तमिलनाडु क्षेत्र अपने निरंतर प्रयासों से वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों प्राप्त करने में सफल रहा है।

वोट

अ. दिनेश प्रभु
सहायक श्रेणी.III(तकनीकी)
मंडल कार्यालय, कोयम्बत्तूर

वोट क्या है,
ये किसलिए बना है।
किसने इसे बनाया है,
कौन इसे फैलाया है।
गरीबों में भय है,
डर है आक्रोश है।
जीवन में वोट है।
किसने कहा वोट है।

वोट है भाई वोट है।
रोटी है, मकान है।
गरीबों की पहचान है।
वोट में शराब है,
नेता की पुकार है।
वोट है भाई वोट है,
जीवन में वोट है।
वोट में वह बांटता नोट है,

एस. भाग्यलक्ष्मी
स.श्रे.I(तकनीकी)
क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नई

सबसे भाग्यशाली आलसी भाई

एक बार की बात है, एक गाँव में एक बूढ़ा आदमी रहता था और उसके तीन बेटे थे। पहले दो बेटे मेहनती हैं और वे अपने परिवार की वित्तीय जरूरतों की रीढ़ हैं। अंतिम पुत्र बिना कोई काम किये बहुत आलसी है। एक दिन, उनके पिता का निधन हो गया। इसलिए, दोनों बड़े बेटों ने अपने आलसी छोटे भाई की उपेक्षा करने का फैसला किया और उन्हें अपने घर से बाहर भेजने की योजना बनाई। उनकी इच्छा के अनुसार छोटा भाई उनके घर से बाहर चला गया और अलग रहने लगा। कुछ महीने बाद, दो बड़े बेटों को अपने व्यवसाय में भारी नुकसान का सामना करना पड़ा और वे अपने नुकसान के कारण के बारे में सोच रहे थे। तभी एक अजनबी उनके पास आया और उनकी समस्या के बारे में पूछा. उन्होंने धीरे–धीरे सब कुछ समझाया और अजनबी ने अपने छोटे भाई को घर वापस लाने का विचार दिया। उन्होंने वैसा ही किया। उनका छोटा भाई उनके घर में रहता था। आश्चर्य की बात यह है कि वे पैसे और सफलता से अभिभूत थे, जिससे उन्हें यह एहसास हुआ कि उनका छोटा भाई सबसे भाग्यशाली व्यक्ति है और उन्होंने अपने छोटे भाई को कभी भी परिवार से बाहर नही ं जाने दिया।

शिक्षाः सौभाग्य लंबी भुजाओं से भी अधिक दूर तक पहुंचता है।

तुम आना
जैसे आता है बसंत
जैसे आते हैं टूसे साखों पर
जैसे रस आता है गन्नों में
जैसे ओस टपकती है कलगी से
जैसे खुशबू फूलों में
ज्यों तितली मचलती है
जैसे पराग महकते हैं
जैसे बोरसी में आँच आती है
जैसे तवे पे रोटी फूलती है
जैसे सुबह की डेहरी से
धूप आती है
आना और बिखर जाना
जैसे बीज खेतों में
जैसे बादल पिघलते हैं।
आ जाना!

इंतज़ार ख़त्म होने से पहले
सांस थमने से पहले
साज टूटने से पहले
आओ इस तरह
कि कोई आस न रहे
आओ सबकुछ लेकर
अपनी तनहाइयों के साथ
अपनी उम्मीदों के साथ
तमाम नाउम्मीदियों को भी
पोटली में भर लाना
मिलकर गोधूली में
नयी उम्मीद भरेंगे!

विश्वास संग आना

सुकिर्ति कुमारी
सहायक श्रेणी.III(राजभाषा)
मंडल कार्यालय, कोयम्बत्तूर

कोमला वेलुमणि
सहायक श्रेणी.III(डिपो)
मंडल कार्यालय, वेल्लूर

कृष्ण कुमार पी सी
सहायक श्रेणी.I(सतर्कता)
मंडल कार्यालय, कडलूर

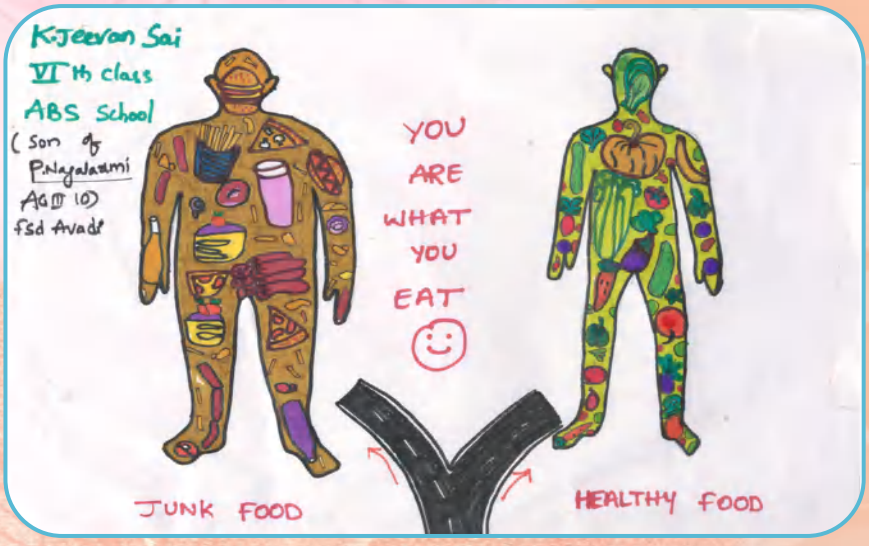

के जीवन साई
सुपुत्र पी नागलक्ष्मी
सहायक श्रेणी.III(डिपो)
खाद्य भंडारण डिपो, आवडी

एस मोहम्मद फारिज़ मुज़न्नी
सुपुत्र मिन्हाज नूरिया
सहायक श्रेणी.II(तकनीकी)
मंडल कार्यालय, चेन्नई

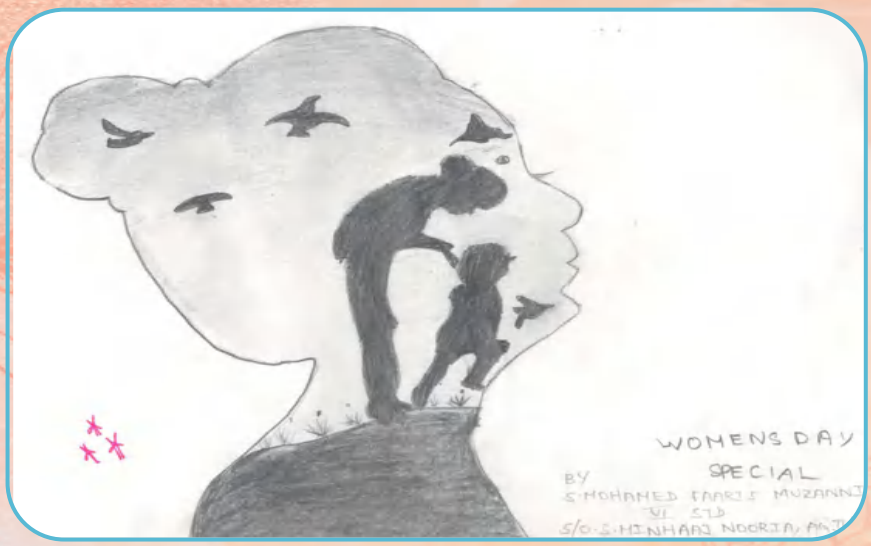

एस महालक्ष्मी
सहायक श्रेणी.III(तकनीकी)
मंडल कार्यालय, तंजाऊर

श्रेया मोल के एच
सुपुत्री रम्यामोल के पी
सहायक श्रेणी.II(तकनीकी)
मंडल कार्यालय, चेन्नई

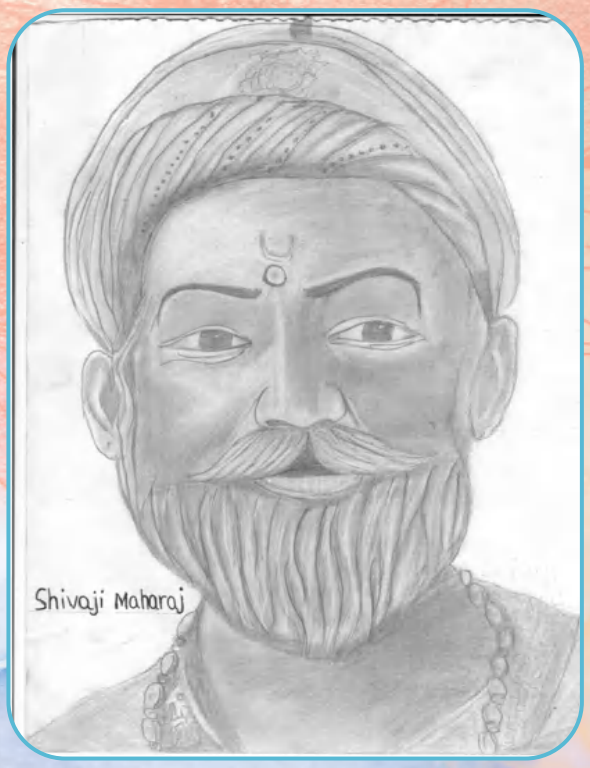

सौर्य कुमार
सुपुत्र राहुल कुमार पंडित
सहायक श्रेणी.I(डिपो)
खाद्य भंडारण डिपो, आवडी

मुखिल साईराज
सुपुत्र जी पुगलरसी
सहायक श्रेणी.II(तकनीकी)
मंडल कार्यालय, तंजाऊर

पी ए सुबाथिनम
सहायक श्रेणी.II(तकनकी)
मंडल कार्यालय, तंजाऊर

वी अंकिता
सुपुत्री टी के गायत्री
सहायक श्रेणी.II(तकनीकी)
क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नई

अन्वया नितिनराज
सुपुत्री टी आर नितिराज
प्रबंधक(सामान्य)
क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नई

अन्नायलम चतुर्थ अंक

ईशा नरेंद्रन
सुपुत्री गीता सुंदरेसन
सहायक श्रेणी.II(तकनीकी)
क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नई

विवान के
सुपुत्री आर संगीता
सहायक श्रेणी.II(तकनीकी)
क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नई

सान्वी ए
सुपुत्री आर नीतू
सहायक श्रेणी.III(तकनीकी)
क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नई

दसवीं की बोर्ड परीक्षा वर्ष 2020-21 में 92.33 प्रतिशत लाने पर सुश्री निवेदिता राव, सुपुत्री श्री सत्येंद्र प्रताप राव, उप महाप्रबंधक(विधि) को प्रथम पुरस्कार से नवाजा गया।

भारतीय खाद्य निगम
FOOD CORPORATION OF INDIA

आंचलिक कार्यालय (द), चेन्नै-6/ ZONAL OFFICE (S), CHENNAI-6

शैक्षणिक उत्कृष्टता प्रमाणपत्र/ Academic Excellance Certificate

यह प्रमाणित किया जाता है कि ~~मास्टर~~/सर्वश्री निवेदिता राव
~~सुपुत्र~~/सुपुत्री सत्येन्द्र प्रताप राव को दसवीं की बोर्ड परीक्षा वर्ष 2020-21 में 92.33% अंक प्राप्त करने पर I पुरस्कार प्रदान किया जाता है।

This is to certify that ~~Master~~/Ms. Nivedita Rao ~~Son~~/Daughter of Shri/~~Smt.~~ Satendra Pratap Rao has secured ..... % of marks in X Board Examination year 2020-21 and ~~he~~/she is awarded I prize.

स्थान: चेन्नै/Place: Chennai
दिनांक/Date 18.09.2023

महाप्रबंधक (दक्षिण)
General Manager(South)

कार्यकारी निदेशक (दक्षिण)
Executive Director (South)

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार
Department of Official Language, Ministry of Home Affairs, Government of India,
नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति
Town Official Language Implementation Committee
संयोजक: जवाहरलाल स्नातकोत्तर आयुर्विज्ञान शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान
(स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन राष्ट्रीय महत्व का संस्थान)
Convenor: Jawaharlal Institute of Post Graduate Medical Education and Research
(An Institution of National Importance under Ministry of Health & Family Welfare, GOI)
पुदुच्चेरी/Puducherry – 605006

हिन्दी पखवाड़ा समारोह/Hindi Fortnight Celebrations - 2023

प्रशस्ति पत्र/Certificate of Appreciation

यह प्रशस्ति पत्र
भारतीय खाद्य निगम
को पुदुच्चेरी में स्थित नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्य कार्यालयों के बीच वर्ष 2022-23 में राजभाषा कार्यान्वयन के **उत्तम निष्पादन** हेतु दिया जाता है।

This certificate of appreciation is awarded to
Food Corporation of India
for the **good performance** of the official language implementation among the member offices of Town Official Language Implementation Committee, for the year 2022-2023.

डॉ. कुश कुमार शाहा/Dr. Kusa Kumar Shaha
सचिव, नराकास/Secretary, TOLIC

डॉ. राकेश अग्रवाल /Dr. Rakesh Aggarwal
अध्यक्ष, नराकास/Chairman, TOLIC

दिनांक/Date: 27.12.2023

जिपमेर, पुदुचेरी में आयोजित नराकास बैठक में नराकास के सदस्य कार्यालयों के बीच वर्ष 2022-23 में राजभाषा कार्यान्वयन के "उत्तम निष्पादन" हेतु मंडल कार्यालय, कडलूर को पुरस्कृत किया गया। इस प्रतियोगिता के पुरस्कृत सदस्यों को राजभाषा के छमाही रिपोर्ट के आधार पर चयन किया गया था।

वर्ष 2022-23 के दौरान भारतीय खाद्य निगम, क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नई द्वारा संघ की राजभाषा नीति के उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन के लिए द्वितीय स्थान एवं प्रशस्ति पत्र से नवाजा गया।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति(उपक्रम) चेन्नै
TOWN OFFICIAL LANGUAGE IMPLEMENTATION COMMITTEE(PSU) CHENNAI

प्रशस्ति पत्र
Commendation-Certificate

यह प्रशस्ति पत्र श्री लोकेश कुमार शाह के. आर. सी. जे. T (ए. भा.) भा. ख. नि. लि. को वर्ष 2022-23 के दौरान उनके/उनकी संगठन द्वारा संघ की राजभाषा नीति के श्रेष्ठ प्रदर्शन के लिए द्वितीय स्थान प्राप्त करने में उनके/उनकी सराहनीय योगदान के लिए प्रदान किया जाता है।

This Commendation Certificate is awarded to Mr. Lokesh Kr. Sha. K.R. A.G.T (OL) FCI for his/her admirable contribution to his/her organization for being adjudged Second for commendable performance in implementing the Official Language policy of Union by his/her organization during the Year 2022-23.

स्थान/VENUE : चेन्नै/Chennai
दिनांक/DATE : 11/07/2023

ए. एस. अरुणाचलम
(ए.एस.अरुणाचलम/A.S.Arunachalam)
अध्यक्ष, चेन्नै नराकास(उपक्रम)
Chairman, Chennai TOLIC(PSU)

तमिलनाडु क्षेत्र में आयोजित विभिन्न गतिविधियां

भारतीय खाद्य निगम, क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नई में आयोजित हिंदी दिवस की झलकियां

हिन्दी दिवस समारोह

पुरस्कार वितरण

निबंध लेखन प्रतियोगिता

हिंदी अखबार पठन में प्रतिभागिता

हिंदी प्रश्नोत्तरी में प्रतिभागिता

भारतीय खाद्य निगम, मंडल कार्यालय, चेन्नई - हिंदी दिवस की झलकियां

भारतीय खाद्य निगम, मंडल कार्यालय, तूतीकोरिन - हिंदी दिवस की झलकियां

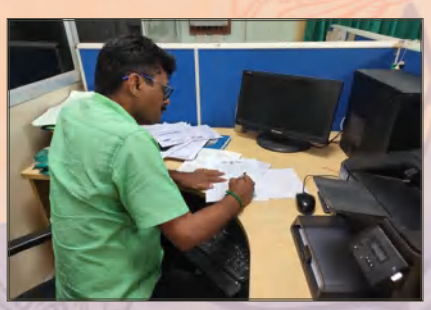

भारतीय खाद्य निगम, मंडल कार्यालय, तंजाऊर - हिंदी दिवस की झलकियां

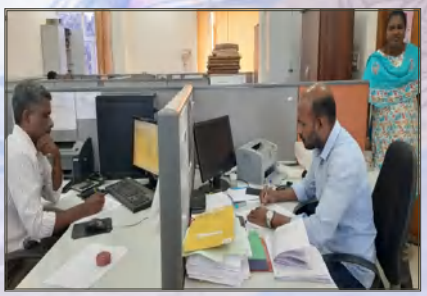

तमिलनाडु क्षेत्र में आयोजित विभिन्न गतिविधियां

भारतीय खाद्य निगम, मंडल कार्यालय, वेल्लूर - हिंदी दिवस की झलकियां

भारतीय खाद्य निगम, मंडल कार्यालय, कडलूर - हिंदी दिवस की झलकियां

भारतीय खाद्य निगम, मंडल कार्यालय, कोयंबत्तूर - हिंदी दिवस की झलकियां

भारतीय खाद्य निगम, क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नई - राष्ट्रीय पोषण माह की झलकियां

रैली के दौरान

स्कूल के बच्चों को पुरस्कार वितरण

पौधारोपण के दौरान

राष्ट्रीय पोषण माह समापन समारोह

तमिलनाडु क्षेत्र में आयोजित विभिन्न गतिविधियां

मंडल कार्यालय, चेन्नई

मंडल कार्यालय, वेल्लूर

मंडल कार्यालय, तूतीकोरिन

मंडल कार्यालय, कोयंबत्तूर

मंडल कार्यालय, कडलूर

मंडल कार्यालय, तंजाऊर

स्वच्छता ही सेवा एवं राष्ट्रीय पोषण माह गतिविधिया

भारतीय खाद्य निगम, क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नई- राष्ट्रीय एकता दिवस

भारतीय खाद्य निगम, क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नई- स्वच्छता पखवाडा गतिविधियां

तमिलनाडु क्षेत्र में आयोजित विभिन्न गतिविधियां

क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नई

मंडल कार्यालय, कोयंबत्तूर | मंडल कार्यालय, कडलूर | मंडल कार्यालय, तंजाऊर

मंडल कार्यालय, वेल्लूर | मंडल कार्यालय, तूतीकोरिन | मंडल कार्यालय, चेन्नई

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस गतिविधियों

सतर्ककता जागरूकता समारोह

क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नई

मंडल कार्यालय, चेन्नई | मंडल कार्यालय, कडलूर | मंडल कार्यालय, तंजाऊर

सतर्ककता जागरूकता समारोह

मंडल कार्यालय, कोयंबत्तूर

मंडल कार्यालय, वेल्लूर

मंडल कार्यालय, तूतीकोरिन

नराकास(उपक्रम) चेन्नई द्वारा आयोजित अंतर उपक्रम नाटक प्रतियोगिता में प्रदर्शन

तंजाऊर में आयोजित अंतर क्षेत्रीय सांस्कृतिक कार्यक्रम में प्रदर्शन

माननीया कार्यकारी निदेशक के साथ तमिलनाडु टीम

हिंदी नाटक का दृश्य

क्षेत्रीय भाषा (तमिल) नाटक का दृश्य

सामूहिक नृत्य